सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9839844887

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2009 वर्ष 8 अंक 10

मदीने की तमन्ना

असाग़िर यहां के हैं आलम में अहसन
अकाबिर में यां के है शाने जमाली

ख़ुदा ने जिन्हें यां इमामत है बख़्शी
नबी के हैं महबूब रुत्बा है आली

ख़ुदा गर न चाहे नबी गर न चाहे
क़ियामे मदीना से हो जाएं आरी

कशिश क्या है रक्खी मदीने में रब ने
हर इक जाने मोमिन मदीने पे वारी

चले आ रहे हैं अरब और अजम से
मुक़द्दर के ऊँचे और क़िसमत के आली

मेरे रब बता दे करम से तू अपने
कि आसी की आएगी कब यां की बारी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फ़ोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

मुहर्रमुल हराम	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
नुबूवत की रौशनी	एम0 हसन अंसारी	7
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	8
इस्लाम व मग़रिब		10
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सैय्यद अबुल हसन अली हसनी	11
जग नायक	मौ0 स0 म0 राबे हसनी	13
हिजाब हमारा गर्व भी है और	डॉ0 रुख्साना जबीं	15
तअ़जियादारी अवैध है (पद्य)	डॉ0 हारून रशीद	18
हम कैसे पढ़ायें	डॉ. सलामत उल्लाह	19
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी	22
मुसलमानों पर एक नजर	एम0 हसन अंसारी	24
नअ़ते नबी (सल्ल0)	आसी फैजाबादी	25
एक ऐतिहासिक सभा	मु0 जुबैर नदवी	26
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	32
ख़लायी बस्तियाँ	अबू ओमामा	35
हुब्बे हुसैन (रजि0)	हारून रशीद	36
स्वतंत्रता संग्राम में	मौ0 अब्दुल वकील नदवी	37
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

मुहर्रमुल हराम

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

मुहर्रम हिजरी सन् का पहला महीना है और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत की यादगार है। अगरचि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 27 सफ़र सन् 13 नबवी, को अल्लाह के हुक्म से हिजरत के लिये मक्के से निकले थे आप के यारे ग़ार हज़रत अबू बक्र साथ थे, तीन रोज़ ग़ारे सौर में कियाम रहा फिर वहाँ से निकल कर दोशंबे के रोज़ क़ुबा पहुँचे वहाँ मसजिद की तअ़मीर की जो दुन्या की सब से पहली मस्जिद है। क़ुबा में तीन रोज़ क़ियाम के बअ़द आप क़ुबा से मदीना रवाना हुए यह जुमे (जुमुआ़) का दिन था और रबीउ़लअव्वल का महीना था।

यह मुहर्रम का महीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आमद से पहले से था, और चार मुहतरम (सम्मानित) महीनों रजब, ज़ीकअ़दा, ज़िलहिज्जः और मुहर्रम में से एक था। इन चार महीनों में अ़रब लोग लड़ाई झगड़े से बचते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिअ़सत के बअ़द इस्लाम ने भी इन महीनों की हुरमत (सम्मान) बाक़ी रखी।

अ़हदे फ़ारूक़ी से क़ब्ल लोग वहाँ क़दीम कलेन्डर से काम चलाते रहे होंगे, लगता ऐसा ही है कि सन नबवी भी रवाजपिज़ीर न था बअ़द के लोगों ने हिजरत व बिअ़सत के बीच के वाकिआ़त को सने नबवी से ज़ाहिर किया। अ़हदे फ़ारूक़ी में जब बअ़ज़ सहाबा का ज़ेहन इस जानिब गया कि अपना इस्लामी कलन्डर होना चाहिये तो हज़रत उ़मर फ़ारूक़ और दूसरे बड़े सहाबा की राए हुई कि हक़ीक़त में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के बअ़द ही इस्लामी इन्क़िलाब रू नुमा हुआ है इस लिये सहाब –ए–किराम इस्लामी कलन्डर को हिजरत के वाक़िअ़े से जोड़ने पर मुत्तफ़िक़ हो गये। अगरचि आप ने हिजरत सफ़र में फ़रमाई थी लेकिन सन् हिजरी उसी साल के मुहर्रम से माना गया। इस तरह मुहर्रम का महीना इस्लामी तारीख़ का अहम तरीन महीना है।

फिर यह हराम (इज़्ज़त व हुरमत–सम्मान) वाला महीना है। इस महीने की दसवीं तारीख़ भी बड़ी अहम्मीयत रखती है, कहते हैं, 10 मुहर्रम ही दादा आदम अलैहिस्सलाम की शजरे मम्नूआ़ (निषिद्ध वृक्ष) से खा लेने की मुआ़फ़ी (क्षमा) मिली थी, इसी दस तारीख़ को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नमरूदी आग गुलज़ार हो गई थी, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती इसी तारीख़ में जोदी पहाड़ पर लगी थी और तूफ़ाने नूह (अलैहिस्सलाम) ख़त्म हुआ था। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली ने इसी तारीख़ में साहिल पर उगल दिया था। और 10 मुहर्रम ही को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राइल के लिये अल्लाह तआ़ला ने समन्दर में ख़ुश्क रास्ता बना दिया था जिस से मूसा अलैहिस्सलाम और बनू इस्राईल पार उतर गये थे जब कि आप का पीक्षा करने वाले फ़िरऔन और उसके लशकर को उसी रास्ते में डिबो दिया था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्के से मदीना तशरीफ़ ले आए तो देखा कि यहाँ के यहूदी 10 मुहर्रम को रोज़ा रखते हैं, तो आप ने उन से पूछा कि क्यों रोज़ा रखते हो जवाब दिया कि 10 मुहर्रम को अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फ़िरऔन से नजात दी थी उस के शुक्रिये में हम 10 मुहर्रम को रोज़ा रखते हैं, आप ने फ़रमाया मूसा अलैहिस्सलाम का हक़ हम पर तुम से जियादा है चुनाँचि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद रोज़ा रखा और उम्मत को रोज़ा रखने का हुक्म दिया। उस वक्त तक रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ न हए थे इस लिये 10 मुहर्रम (आशूरा) की फ़र्ज़ जैसी अहम्मीयत थी लेकिन जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो आशूरा (10 मुहर्रम) का रोज़ा सुन्नत क़रार पाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने एक बार फ़रमाया कि यहूद 10 मुहर्रम का रोज़ा रखते हैं उन से फ़र्क़ करने को अगर मैं ज़िन्दा रहा तो 10 मुहर्रम के साथ 11 या 9 का रोज़ा मिला कर रखूंगा, लेकिन अगले साल का मुहर्रम आप को न मिल सका, मगर सहाबा ने इस की तअमील की और अब तक दीनदार लोग 10 के साथ 9 या 11 का रोज़ा मिला लेते हैं। बअज़ उलमा का यह भी कहना है कि अब यहूद 10 मुहर्रम का रोज़ा सिरे से रखते ही नहीं है, तो अब सिर्फ़ 10 का रोज़ा रख लेना मकरूह नहीं है।

ग़रज़ कि मुहर्रम का महीना हिज्री सन् का पहला महीना है और बड़ा ही बाबरकत महीना है ख़ास तौर से इस की दस्वीं तारीख़ यअ्नी आशूरा का दिन जिस में अल्लाह अपने मुक़र्रब बन्दों के साथ इनआम व इकराम का मुआमला करता रहा है। लेकिन इसी दस मुहर्रम को एक ऐसा वाक़िआ वाक़िअ हुआ जो हक़ीक़त के एअ्तिबार से तो बड़ा बा बरकत मगर ज़ाहिर में इस ने पूरी उम्मत को हिला कर रख दिया, वह है हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत। हक़ीक़त के एअतिबार से शहादत इतना ऊँचा दरजा है कि जिस की नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमन्ना की, शहीद को जो ख़ुसूसी व इम्तियाज़ी ज़िन्दगी मिलती है उस एअतिबार से बड़ा बा बरकत दिन है लेकिन ज़ाहिर में नवासा–ए–रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस तरह उन के नाना का कल्मा पढ़ने वालों ने शहीद किया वह बड़ा दर्दनाक और दिलों को हिला देने वाला है। इख़्तिसार के साथ वाक़िआ यूं है कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि उन के बअ्द किसी एक पर उम्मत मुत्तहिद होने वाली नहीं है लिहाज़ा नेक नियती से अपने बेटे यज़ीद को वलीअहद नामज़द कर दिया जिस से तारीख़ के मुताबिक पांच सहाबा ने इत्तिफ़ाक़ न किया, अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र, हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम, हज़रत मुआविया के इन्तिक़ाल के बअ्द, हज़रत अब्दुर्रहमान तो इन्तिक़ाल पा गये, बक़िया चार ने यज़ीद की बैअत न की, मगर जैसा की तबरी की तारीख़ में है और इब्नि कसीर ने भी लिखा है कि इब्नि अब्बास, व इब्नि उमर, रज़ियाल्लाहु अन्हुम ने बअ्द में बैअत कर ली थी बाक़ी रहे हज़रत हुसैन व इब्नि ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम यह दोनो मदीना तय्यिबा में थे इन से बैअत तलब की गई तो इन्हों ने बैअत न की और मक्का मुकर्रमा चले गये। वहाँ अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने अपनी ख़िलाफ़त का रास्ता हमवार करने लगे, हज़रत हुसैन को कूफ़ा वालों ने दअ्वत दी कि वह कूफ़ा आएं और कूफ़ा की क़ियादत संभालें। कूफ़ा वालों की दअ्वत इतने इसरार के साथ हुई कि हज़रत हुसैन उस जानिब माइल हो गये और तफ़्तीशे हाल के लिये अपने चचा ज़ाद भाई मुसलिम बिन अक़ील को भेज दिया, यह ग़लत है कि उन के साथ दो मअ्सूम बच्चे भी थे, जहाँ ख़ुद हज़रत हुसैन जाने में पहल नहीं कर रह हैं वहां दो छोटे बच्चे कैसे भेजे जा सकते थे। बहर हाल मुसलिमबिन अक़ील कूफ़ा पहुँचे तो कूफ़ियों ने पुरतपाक इस्तिक़बाल किया और हज़ारों ने मुस्लिम के हाथ पर हज़रत हुसैन के लिये बैअत की यहाँ तक कि हज़रत मुस्लिम ने क़ासिद भेज दिया और हज़रत हुसैन (रज़ि0) ने सफ़र का इरादा फ़रमा लिया, मक्के वालों ने खास तौर से अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने आप को बहुत रोका और कहा कूफ़ियों को आप के वालिद और भाई आज़मा चुके हैं आप उन पर एअतिबार न कीजिये और तबरी में तो एक रिवायत यह भी मिलती है कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने यहाँ तक कहा कि आप यहाँ की क़ियादत सभालिये मैं आप का साथ दूंगा लेकिन हज़रत के दिल में कूफ़ियों के वअ्दे घर कर चुके थे आप रवाना हो गये और इतना एअ्तिमाद हुआ कि औरतों के साथ रवाना हुए। रास्ते में कुफ़ियों की बदअहदी और हज़रत मुस्लिम की शहादत की ख़बर मिली लेकिन सूरते हाल ऐसी हो गई कि आप का सफ़र जारी रहा यहां तक कि करबला का मैदान आ गया, सामने यज़ीदी फौज थी और यह कुल 72, औरतें भी साथ।

शेष पृष्ठ 17

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु0 मंजूर नोमानी

तर्जमाः ऐ पैगम्बर! उन से कहिये! आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे पर्वदिगार ने क्या क्या तुम पर हराम किया है। (और उस ने क्या क्या खास पाबंदियाँ तुम पर लगाई हैं, सब से पहला और सब से अहम हुक्म उस का यह है) कि उस के साथ किसी को शरीक न करो (हर किस्म के शिर्क से बचो) और (उस के बाद दूसरा हुक्म उस का यह है, कि) माँ–बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो। और इफ्लास (दरिद्रता व निर्धनता) की वजह से अपने पैदा होने वाले बच्चों को हलाक (वद्ध) न कर डालो, हम तुम्हें भी रिज्क देते हैं और उन्हें भी देंगे। और बेशर्मी व बेहयाई की बातों के पास न जाओ चाहे वे छुपे हुये हों या खुले हुये। और किसी ऐसी जान को कत्ल न करो जिस का कत्ल अल्लाह ने हराम ठहराया है, मगर यह कि किसी हक की बिना पर किसी को कत्ल किया जाये (जैसे किसास (प्रतिहिंसा) में कातिल को कत्ल किया जाता है)। ये वे बातें हैं जिन का तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है, शायद कि तुम समझ–बूझ का रवैया इख्तियार करो। और (उस का हुक्म है कि) यतीमों के माल के करीब न जाओ (और उन के माल को हाथ भी न लगाओ) मगर यह कि (उन के फाइदे के लिये उन के माल का कोई इस्तेमाल जरूरी हो तो) अच्छे तरीके से कर सकते हो, (वह भी) उस वक्त तक कि यतीम बड़ा हो जाये। और इन्साफ व दियानत के साथ नाप–तौल पूरी किया करो। हम आदमी पर इतनी ही जिम्मेदारी डालते हैं जितनी कि उस के बस में हो। और जब बात कहो तो इन्साफ की और खुदा लगती कहो, अगरचे संबधित आदमी तुम्हारा कोई रिश्तेदार ही हो। और अल्लाह (के हुक्मों की पूरी पूरी फर्माबरदारी कर के उस) के अहद को पूरा करो। ये, वे बातें हैं जिन का अल्लाह ने तुम्हें खास तौर से हुक्म दिया है, उम्मीद है कि तुम नसीहत पकड़ोगे।

(अल अनआम :152–153)

अल्लाह की बात मानने वालों और न मानने वालों का अन्जाम

सूरए–रअ्द की ये आयतें पढ़िये और फैसला कीजिये कि आप को किस रास्ते पर चलना है। और निम्निलिखित दो पक्षों में से किस पक्ष के साथ अपने को शामिल करना है :

तर्जमाः जिन बन्दों ने अपने पर्वदगार की बात मानी और दावते–ईमानी और पैगामे–रब्बानी को कबूल किया उन के लिये बड़ी खुश–अन्जामी है, और जिन्हों ने कबूल नहीं किया (उन के लिये बड़ा बुरा अंजाम है, उन का हाल वहाँ यह होगा कि) अगर मान लो उन के पास वह सब कुछ हो जो सारी दुन्या में है और उस के साथ उतना ही और भी हो तो वे अपनी खलासी (छुटकारे) के लिये फिद्ये के तौर पर, उस सब को दे डालेंगे, उन के वास्ते बड़ा सख्त हिसाब है, और दोजख उन का (आखिरी और दाइमी) ठिकाना है और वह बड़ी बुरी करारगाह (ठिकाना) है। (ऐ पैगम्बर!) जिस (खुश–नसीब बन्दे) को इस हकीकत का इल्म व यकीन नसीब है कि जो कुछ तुम पर तुम्हारे पर्वर्दगार की तरफ से नाजिल किया गया है वह हक है, क्या वह उस (बद–बख्त शख्स) की तरह और (अंजाम में) उस जैसा हो सकता है जो इस हकीकत से अन्धा है (जाहिर है कि उन दोनों का अन्जाम एक नहीं हो सकता) नसीहत तो बस सही अक्ल व बसीरत रखने वाले ही कबूल करते हैं। जो बन्दे अल्लाह के अहद को पूरा करते हैं और वादा तोड़ा नहीं करते और जो उन संबंधों को जोड़ते हैं जिन के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और जो बन्दे अपने मालिक से डरते हैं, और हिसाब व अन्जाम की बुराई का अन्देशा रखते हैं, और जो बन्दे अपने मालिक की रिजा जूई में अपने नफ्सों को काबू में रखते हैं, और नमाज पाबंदी से अदा करते हैं, और हम ने जो कुछ उन को दिया है वे (नेकी की राहो में) उस में से छुपे और खुले खर्च करते हैं और (जिन का

तरीका यह है कि) बुराई का जवाब भी वे नेकी से देते हे, बस ये वे बन्दे हैं जिन के लिये दारे–आखिरत की खुश अन्जामी है। (यानी) सदाबहार जन्नते हैं जिन में वे दाखिल किये जायेंगे और उन के (साथ उनके) वे माँ–बाप और वे बीवी बच्चे भी जिन में कुछ सलाह और नेकी होगी। और मलाइका (फरिश्ते) हर दरवाजे से उन के पास पहुँच कर (उन को इस तरह सलामी देंगे) "सलामुन अलैकुम् बिमा सबर्तुम् फनिअ्म अुक्बद्दार"

"(यानी सलाम आप लोगों पर इस वजह से कि आप लोग मजबूती से जमे रहे (हक़ व नेकी के रास्ते पर) बस बहुत अच्छा है आप लोगों का उख्र्वी अंजाम)। और इस के उलटे जिन लोगों की सीरत यह है कि वे अल्लाह के अहद को पक्का करने के बाद तोड़ते हैं और जिन संबंधों को जाड़ने का हुक्म दिया गया था उन को तोड़ते हैं और अल्लाह की जमीन में फसाद और गुम्राही फैलाते हैं, उन के लिये अल्लाह की लानत है, और दारे–आखिरत का बुरा अन्जाम है।

(अर्रअद : 18–25)

सर्कश मुजरिमों को सख्त तंबीह और कियामत में उन का अन्जाम

सूरए–इब्राहीम का यह पूरा आखिरी रूकूअ् पढ़िये। कैसी लरजाने वाली तंबीह है। अल्ला हुम्मह्फ़िज़्ना[1]

इर्शद है :

तर्जमाः और हरगिज ऐसा मत खियाल करो कि अल्लाह जालिमों की बदकिर्दारियों से बेखबर है (ऐसा नहीं है, उसे सब खबर है, उन के सारे करतूत उस की नजर में हैं, वहाँ) उन के जजा–सज़ा के मुआमले को उस ने उस "यौमे–अज़ीम" (महान दिन) के लिये मुअख्खर (विलंबित) कर दिया जिस दिन (की हौलनाकियों को देख कर) उन मुजरिमों की आँखें फटी की फटी रह जायेंगी (वे ऊँट की तरह) सर आस्मान की तरफ उठाये (हाँपते–काँपते) दौड़े चले जा रहे होंगे। (उन की घबराहट और बदहवासी का यह आलम होगा कि ऊपर ही की जानिब उठी रहेंगे उन की) निगाहें खुद उन की तरफ लौट के न आयेंगी (यानी आँखें अपने को देखना ही भूल जायेंगी) और उन के दिल बिल्कुल खाली होंगे (सब्र व करार फिक्र व फहम की सलाहियत से)। और ऐ पैगम्बर! लोगों को उस दिन की आमद से खबरदार कर दो जिस दिन कि अल्लाह का अजाब बिल्कुल उन के सामने आ जायेगा, तो जिन्हों ने (कुफ्रव शिर्क करके) अपने को तबाह व बरबाद किया है वे कहेंगे हमारे मालिक! हमें थोड़ी सी मुद्दत के लिये और मोहलत दे दे (और अपनी हालत के ठीक करने का जरा मौका दे दे, हम तेरे पयाम और तेरी दावत को कबूल करेंगे (यानी ईमान लायेंगे) और रसूलों की पैरवी (अनुसरण) करेंगें। (उन्हें जवाब मिलेगा, आज जब अजाब तुम्हारे सामने आ गया है तो यह बातें करते हो क्या तुम ही न थे (कियामत और आखितरत की जज़ा–सज़ा का इन्कार करते हुये) तुम ने इस से पहले कस्में खा–खा कर कहा था कि तुम्हें कभी किसी तरह का जवाल न होगा (और कभी तुम किसी अजाब में मुब्तला नहीं किये जाओगे)

हालांकि तुम अगले जमाने के उन लोगों की बस्तियों ही में बसे थे जिन्हों ने (पहले कुफ्र व शिर्क कर के तुम्हारी ही तरह) अपने नफ्सों को तबाह व बरबाद किया था और तुम पर यह बात अच्छी तरह खल गयी थी कि हम ने उन के साथ क्या किया (और उन का कैसा अन्जाम हुआ) और (इस के अलावा) हम ने तुम्हारे लिये (अपने पैगम्बरों के जरीये तारीखी (ऐतिहासिक) मिसालें बयान की थीं। (लेकिन तुम ने उन में से किसी बात से भी कोई फाइदा नहीं उठाया और इन्कार व बगावत पर ही कायम रहे) और (हक का रास्ता रोकने के लिये) उन्होंने बड़ी–बड़ी चालें चलीं और उन की सारी चालें खुदा के सामने हैं। और यकीनन् उन की चालें ऐसी थीं कि उन से पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाये लेकिन इराद–ए–इलाही (खुदा की इच्छा) के सम्मुख उन की कोई चाल भी कामयाब नहीं हो सकी)। पस ऐसा खयाल न करो कि अल्लाह, जो वादा अपने रसूलों से कर चुका है (जैसे यह कि सर्कश मुजरिमों को

(1) अल्लाह हमारी हिफाजत फर्माए (कु.मु.)

वह जरूर सजा देगा) वह उस के खिलाफ करने वाला हो जायेगा। हरगिज ऐसा नहीं हो सकता, और बागियों मुजरिमों को सजा देने से कोई उस को रोक नहीं सकता)। बेशक अल्लाह जबर्दस्त और सब पर गालिब है। (मुजरिमों को उन के आमाले–बद की) सजा देने वाला है। (यह सब कुछ उस दिन सामने आयेगा) जिस दिन यह जमीन बदल कर एक दूसरी ही जमीन हो जायेगी, और आस्मान भी बदल जायेगा, और सारे आदमी (अल्लाहु वाहिदुल कह्हार) के सामने पेश होंगे। और तुम देखोगे उस दिन (खुदा के बागियों) मुजरिमों को ज़ंजीरों में जकड़े हुये, उन के कुर्ते क़तिरान तेल, के होंगे (जो गंधक की तरह आग को पकड़ लेता है और बहुत तेजी से जलता है), और आग की लिपटें 'उन के चेहरे का नकाब होंगी, यह सब इस लिये होगा कि अल्लाह हर शख्स को उस के किये के मुताबिक बदला दे। अल्लाह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। यह खुदावंदी पैगाम व एलान है सब लोगों के लिये, और मक्सद यह है कि वे इस के जरीअे आगाह हों और उन्हें मालूम हो कि (उन का और सबका) माबूदे–बरहक़ बस एक ही माबूद है और जो लोग अक़्ल व बुद्धि मत्ता से महरूम नहीं हैं वे नसीहत पकड़ें।

(इब्राहीम : 42–53)

❑❑

नुबूवत की रौशनी

मुहम्मदुल हसनी — एम0 हसन अंसारी

"इन्सानों के इस जंगल में जहाँ सब के सरों पर इच्छाओं का भूत सवार है, नुबूवत की वही रौशनी रास्ता दिखा सकती है जिसने हक लेना नहीं, हक छोड़ना सिखाया है, जिस ने अपनी जान के मुकाबले में हिज्रत करने वालों को प्राथमिकता देने और त्याग करने की शिक्षा दी है, जिस ने गुस्से (क्रोध) को उतारने नहीं बल्कि गुस्सः को पी जाना मर्दानगी करार दिया है, जिस ने रिश्ता तोड़ने वाले से सिल-ए-रहिमी (नाते-दारों रिश्तेदारों से मुहब्बत रखना) का हुक्म दिया है, जिस ने नफा में सब से पीछे रहने और त्याग व बलिदान में सब से आगे रहने की दावत दी है, आह्वान किया है, जिसने परिवारजनों और नातेदारों को फायदा में हमेशा पीछे रखा है और गैरों को हमेशा आगे, जिसने अकेले दुकेले में, रात के अन्धेरे और दिन के उजाले में, एकान्त में और लोगों के बीच में हर जगह और हर मौके पर समान भावना पर क़ाइम रहना तथा किसी लालसा और किसी भय व लालच में भी इस्लाम के इन उसूलों से विमुख न होना इन्सानियत का असल जौहर और कमाल करार दिया है। जिस की तालीम यह है कि कम से कम ख़िदमत लो और ज्यादा से ज्यादा सख़ावत व उदारता से पेश आओ और सवाल से दामन बचाओ। मख़लूक को फायदा पहुँचाओ और उस का बदला सृष्टा से तलब करो, और ख़ुदा की इताअत व इबादत और उस के दीन को अपनी जिन्दगी का मकसद बनाओ। लेकिन मख़लूक से उस के बदला के तलबगार न हो।"

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

गुनाह के मआमले में इताअत फर्ज़ नहीं

हज़रत इब्नि उमर (र0) से रिवायत है कि नबी (स0) ने फरमाया, मुसलमान पर सुनना और मानना लाजिम है। ख्वाह पसन्द हो या नापसन्द हो मगर यह कि गुनाह का हुक्म दिया जाये। अगर गुनाह का हुक्म दिया जाये तो न सुनो और न इताअत करो। (बुख़ारी–मुस्लिम)

कुदरत की शर्त

हज़रत इब्नि उमर (र0) से रिवायत है कि जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनने और मानने पर बैअत करते थे तो आप हमसे फरमा देते थे, उन हुकमों में जिनकी तुम्हारे अन्दर ताकत हो। (बुख़ारी–मुस्लिम)

बागी और जमाअत से कनारा कश के लिये वअीद

हज़रत इब्नि उमर (र0) से रिवायत है कि मैंने रसुलुल्लाह (स0) से सुना है कि जिसने इताअत से हाथ उठा लिया वह कियामत के दिन अल्लाह तआला से ऐसी हालत पर मिलेगा कि उसके पास कोई दलील न होगी। और जो बिना बैअ़त किये हुए मरा वह जाहिलिय्यत की मौत मरा। (मुस्लिम)

एक रिवायत में है जो जमाअत से जुदा होके मरा वह जाहिलिय्यत की मौत मरा।

हज़रत अनस (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, सुनो और इताअत करो, अगरचिः तुम पर एक हब्शी गुलाम ही अमीर हो और उसका सर मुनक्के[1] की तरह हो। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, कि तुम पर सुनना और मानना वाजिब है। तंगी हो या आसानी, खुशी हो या नाखुशी, खुदगर्जी हो या जियादती। (मुस्लिम)

फितनः के जमाना में हुक्म

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन उमर (र0) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (स0) के साथ किसी सफर में एक जगह उतरे। कोई अपना खेमा दुरुस्त करने लगा और कोई अपने चौपाये की देखभाल में मसरूफ हुआ। इतने में रसूलुल्लाह (स0) की तरफ से पुकारने वाले ने नमाजे जमाअत के लिये आवाज दी। तो हम सब रसूलुल्लाह (स0) की खिदमत में हाजिर हुए। आपने फरमाया, कि मुझसे पहले जितने नबी आये हैं उन सब पर वाजिब था कि उम्मत को ऐसी बेहतर बात बतलायें और डराएं जिसको वह जानते हों और इस उम्मत के लिये शुरू में आफिय्यत रख दी गयी है और पिछलों को बुलायें और ऐसे उमूर जिनको तुम बुरा जानते हो पहुँचेंगे। एक फितना आयेगा जो दूसरे फितने को हकीर कर देगा। फिर एक फितना ऐसा आयेगा कि मोमिन कहेगा यह मेरी हलाकत का बाअिस है। मगर वह दौर जायेगा, दूसरा फितना आयेगा तो मोमिन कहेगा यही है, यही है। पस जो आग से निजात हासिल करना चाहे और जन्नत में दाखिल होने की तमन्ना हो वह इस हाल पर मरे कि अल्लाह और रोजे आखिरत पर यकीन रखता हो और लोगों के साथ वही मुआमला करे जो अपने लिये पसन्द करता है। और जो बकदरे ताकत इमाम के हाथ पर बैअत करे। उनके हाथ पर अपना हाथ मारे, फिर अगर दूसरा आदमी आये और अपना ताबिअ करने पर झगड़े तो उसकी गर्दन मार दे। (मुस्लिम)

हज़रत वायल (र0) बिन हजर से रिवायत है कि सलमः (र0) बिन यजीद ने रसूलुल्लाह (स0) से अर्ज किया, अगर हमारे हुक्काम ऐसे हों जो अपना हक माँगें और हमारा हक न दें तो आपका क्या हुक्म है। आपने मुंह फेर लिया। फिर उन्होंने अर्ज किया तो आपने फरमाया, सुनो और इताअत करो। जो वह करेंगे उसके वह जिम्मेदार होंगे और जो

(1) यानी हकीर कम और बे–बिजाअत शख्स हो।

तुम करोगे उसके तुम जिम्मेदार होगे।

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन मस्ऊद (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मेरे बाद खुदगर्जी व बेइन्साफी देखने में आयेंगी। और ऐसी बातें वजूद में आयेंगी जिनको तुम नापसन्द करते हो। लोगों ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! फिर आप हमको क्या हुक्म देते हैं। आपने फरमाया, जिसका तुम पर हक है अदा करो; और जो तुम्हारा हक है वह अल्लाह से माँगो।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

मुसलमान अमीर व खलीफः की इताअत

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह इताअत की, जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की, और जिसने अमीर की इताअत की उसने मेरी इताअत की; जिसने अमीर की नाफरमानी की उसने मेरी नाफरमानी की।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत इब्नि अब्बास (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, किसी अमीर की बात नापसन्द हो तो उसको चाहिए कि सब्र करे। अगर वह उसकी इताअत से एक बालिश्त भी निकला तो वह जाहिलीयत की मौत मरा।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू बक्र (र0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स0) से सुना है कि जिसने अमीर की तौहीन की उसको अल्लाह तआला जलील करेगा। (तिर्मिजी)

उहदः की तलब न करो

हज़रत अब्दुर्रहमान (र0) बिन समरः से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ऐ अब्दुर्रहमान! हुकूमत की ख्वाहिश न करो। अगर तुमको बगैर तलब के मिल जायेगी तो तुम्हारी मदद की जायेगी। और अगर माँगे से मिली तो तुम उसके सिपुर्द कर दिये जाओगे। और जब किसी बात पर कसम खाओ फिर उससे बेहतर कोई बात पाओ तो उसको इख्तियार कर लो और अपनी कसम का कफ्फारः दे दो।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू जर (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ऐ अबू जर (र0) मेरा खयाल है कि तुम कमजोर हो, मैं तुम्हारे लिए वही चाहता हूँ जो अपने लिये चाहता हूँ। देखो, तुम दो पर भी हुकूमत की जिम्मेदारी कुबूल न करना और यतीम का माल अपनी सिपुर्दगी में न लेना। (मुस्लिम)

हज़रत अबू जर (र0) से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह! मुझे आप हाकिम बना दीजिए। आपने मेरे शाने पर हाथ मारा और फरमाया, ऐ अबू जर! तुम कमजोर हो। हुकूमत कियामत में रुसवाई और निदामत का सामान है; सिवाये उसके जो इसको उसके हक के साथ ले और अपने फराईजें हुकूमत बखूबी अदा करे। (मुस्लिम)

हुकूमत की हिर्स का अन्जाम

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तुममें हुकूमत की हिर्स पैदा होगी। और वह कियामत में नदामत का सामान बन जायेगी। (बुख़ारी)

अच्छे और बुरे मूशीरेकार

हज़रत अबू सअीद (र0) व अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला ने जिसको नबी बनाया या खलीफः, उसके लिये दो तरह के मुअतमद और राजदार होते हैं। एक उसको नेकी का हुक्म देता है और उस पर आमादा करता है। और मासूम वह है जिसको अल्लाह बचाये । (बुख़ारी)

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला जब किसी हाकिम के साथ भलाई का इरादा करता है तो उसको अच्छा और दियानतदार वजीर देता है, कि अगर वह भूल जाये तो उसको याद दिलाये; और अगर याद हो तो उसकी मदद करे। और जब किसी हाकिम के साथ बुराई का इरादा करता है तो उसको बुरा वजीर देता है कि अगर वह भूल जाये तो याद न दिलाये, अगर याद हो तो उसकी मदद न करे।

(अबूदावूद)

शेष पृष्ट 12

इस्लाम व मग़रिब

मौ0 (स0) अबुल हसन अ़ली हसनी

एक ऐसा दीन जो जिन्दगी के तमाम शोबों पर हावी है, जो जिन्दगी को खास अकायद व हकायक के जरियो एक खास साँचे में ढालना चाहता है, जो तहारात व इफ्फत का खास तसव्वुर रखता है, अपने मख्सूस तमद्दुन और मुनासिब माहौल के बिना जिन्दा नहीं रह सकता। ऐसे दीन और उसके मानने वालों का खास तौर से उस मग़रिबी तमद्दुन के साथ गुजारा नहीं हो सकता जो खास तारीखी अवामिल के तहत खालिस माद्दापरस्ती के माहौल में पला हो।

इस्लामी तमद्दुन में इबादात का पूरा निजाम तहारत से जुड़ा है। और मगरिबी तमद्दुन ज्यादा से ज्यादा नजाफत के मफहूम से आशना है। इस्लामी तमद्दुन नजर की इफ़्फ़त, कल्ब की इफ़्फ़त और ख्याल की पाकीजगी का काइल है। मगरिबी तमद्दुन सिर्फ कानूनी और ज्यादा से ज्यादा उर्फी हुदूद का एहतराम करता है। इस्लामी तमद्दुन हिजाब का हामी है। और वह शरीअत की दी हुई इजाजतों के दायरे के अन्दर कड़ाई से उसका पाबन्द है। मगरिब हिजाब के इब्तिदाई मफहूम से भी ना आशना हो चुका है। इस्लामी तमद्दुन मर्द व औरत के आजादाना घुलने मिलने का मुखालिफ है। और इसे समाज के लिये नुकसानदेह और बहुत सी अखलाकी खराबियों का सबब समझता है। मगरिब इसे जिन्दगी की बुनियाद समझता है।

इन उसूली इख्तेलाफात के अलावा तसवीर, कुत्ते, मर्दों के लिये सोनो चाँदी और रेशम के इस्तेमाल, जबीहा का फर्क और बहुत सी बातो में दोनों के नुक्तएनजर मुख्तलिफ और मुतजाद हैं। इसलाम तस्वीर को अच्छी नजर से नहीं देखता। सही हदीस में आता है कि "जिस घर में तस्वीर, कुत्ता और मुजस्समें होते हैं उसमें रहमत के फरिश्ते नहीं आते।" मगरिबी तमद्दुन में तस्वीर के बिना लुकमा तोड़ना भी मुशकिल है। ऐसी सूरत में मगरिबी तमद्दुन इख्तियार करके इसलाम के निजामे तहारत व इफ़्फ़त, हया व सादगी और सुन्नते नबवी पर कायम नहीं रहा जा सकता।

हमेशा के लिये मगरिबी तमद्दुन इख्तियार कर लेने ही से यह दुशवारियाँ पैदा नहीं होतीं, आरजी तौर पर भी इस माहौल में थोड़ा सा वक्त गुजारने पर भी यह दुशवारियाँ पेश आती हैं। इसका अन्दाजा उन आला होटलों या कियाम गाहों में ठहरने से हो जाता है जिनकी बनावट मगरिबी तर्ज़ पर है। इनमें ठहरने वाले के लिये तहारत का एहतमाम और फरायज की पाबन्दी मुशकिल हो जाती है।

इस्लामी सीरत व आदात के साथ इस लेख के पढ़ने वालों को इसकी भी कोशिश करनी चाहिये कि उन के घर और माहौल में इस्लामी तमद्दुन और इस्लामी मुआशरत कारफरमा हो और मगरिबी तमद्दुन से जहाँ तक़ हो सके दूर रहा जाये। शरई पर्दा हया व तहारत पानी के इस्तेमाल की सहूलत, सम्ते किबला की जानकारी कपड़ों और दीगर इस्तेमाल की चीजों की शरई पाकीजगी बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत का पूरा एहतमाम हो कि इस के बिना शरई व मसनून तरीके पर जिन्दगी गुजारना तो अलग रहा, दीनी फरायज की अदायगी भी मुशकिल हो जाती है।

❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर

इस फ़क़ीर के नज़दीक इस की सबसे बेहतर तौजीह (स्पष्टीकरण) वह है जो इमाम आलूसी ने इब्नि अ़तीया से नक़्ल की है कि इन्सान को हक़ की हैसीयत से जो बदला मिले गा वह सिर्फ़ वह सवाब है जो ख़ुद उस के अ़मल पर मबनी (आधारित) हो उस के सिवा जो सवाब पहुँचेगा वह अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमते ख़ास की वजह से होगा।

(मुस्तुफाद अज़ कामूसुल फिक्ह जिल्द2)

❑❑

किस्त : 18

कारवाने जिन्दगी

आत्म कथा

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

अरबी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का अध्ययन तथा निबन्ध लेखने का अभ्यास

भाई साहब को अरबी अख़बार व मैगजीन के पढ़ने का बड़ा शौक था। शायद हिन्दुस्तान में उस समय चन्द ही आदमी अरब देशों के अखबारों से वाकिफ होंगे। और उन के पढ़ने की सुव्यवस्था करते होंगे। जब से वह हज (सन् 1926) से आये थे, मक्का का अखबार 'उम्मुल कुरआ' उन के नाम जारी था। इस मकान में आने के बाद उन्होंने एक नदवी फाजिल मोल्वी सैयद सईद अशरफ साहब से जो लखनऊ के मशहूर उर्दू अखबार 'हमदम' में अरबी से उर्दू में तर्जमः का काम करते थे, यह तय कर लिया था कि वह अरबी अखबारों को पढ़ने और उन से काम लेने के बाद उन को पहुँचा दिया करेंगे। मोल्वी सेयद सईद अशरफ साहब के जरियाः जो अखबार भाई साहब के पास आते थे, उन में दमिश्क से निकलने वाला 'फता उल अरब' और फिलिस्तीन से निकलने वाला 'अल जामियतुल इस्लामियः' (जो मुफ्ती अमीन अल हुसैनी साहब का तर्जुमान था) के इफ्तेताहिये (सम्पादकीय लेख) बड़े ताकतवर, सारगर्भित और प्रभावशाली होते थे, और "अल–हेलाल" के मौलाना आजाद के कलम के लिखे हुए इफ्तेताहियों की याद ताजः करते थे। मैं यद्यपि अरबी साहित्य की आखिरी किताबें बढ़ चुका था, लेकिन इन इखबारों के समझने में दिक्कत पेश आती थी। इस में भाई साहब ने मदद व रहनुमाई फरमाई। वह आधुनिक शब्दावली की व्याख्या करते। और मैं धीरे–धीरे उन को सहज पढ़ने लगा और मुझे इस से निबन्ध लेखन में बड़ी मदद मिली क्यों कि अखबारों में तरह तरह के विषय होते हैं और अनेक शब्द बार–बार आते हैं। इन दोनों अखबारों के एडीटर भाषा के मर्मज्ञ और उचित शब्दों का प्रयोग करने वाले और अरबी के पंडित तथा उच्च कोटि के अखबार नवीस थे।

उस समय दारूलउलूम के 'जमीयत अल इस्लाह' के रीडिंग रूम में 'अलमनार' अल हेलाल, अलमुकततफ, मजल्लतुज्जुहरा, अल मज मउल इल्मी, अल इरफान आदि पत्रिकायें आती थीं। मौलाना मसऊद आलम नदवी की दोस्ती और साथ की वजह से मैं भी उन को बड़े शौक से पढ़ता था। हेलाली साहब आये तो उन्हों ने उस्ताद मुहिब्बुद्दीन अलखतीब के साप्ताहिक 'अल फत्ह' का परिचय कराया, और उस के मंगवाने और पढ़ने की रूचि पैदा की। इस पत्रिका में उस समय के उच्च कोटि के इस्लामी चिन्तन वाले कलमकार (अमीर अल बयान, अमीर शकेब अरसलान आदि) लेख लिखते थे। इस पत्रिका के अध्ययन से जो उच्च साहित्य तथा इस्लामी चिन्तन की मंजूषा थी, हम लोगों को बड़ा फायदा पहुँचा। मसऊद साहब ने भी और मैं ने भी लिखना शुरू किया। अकबर इलाहाबादी मरहूम पर मेरा लम्बा लेख कई किस्तों में प्रकाशित हुआ जिस में उनके पाश्चात सभ्यता और अंग्रेजी तालीम पर आलोचना की पंक्तियों का तर्जमः और उस की घृष्ठभूमि प्रस्तुत की गयी थी, और भी समय–समय से लेख निकलते रहे। उस समय तक हमारा अध्ययन और अभिरूचि ऐसे साहित्यिक दायरे में सीमित था जिस में इस्लामी विचारों की झलक और दीनी गौरव की मिलावट भी थी लेकिन लेखिनी और शैली का रूख अभी दावत की तरफ नहीं हुआ था, न अध्ययन में फैलाव और विचारों में गहराई पैदा हुई थी। "अल जिया" ने इस अभिरूचि और लेखन अभ्यास पर एड लगाने का काम किया, और इस से लेखिनी में प्रवाह और चिन्तन में उफान पैदा हुई, लेकिन उस समय भी लेखन में आह्वान व

आगे बढ़ने का तत्व पूरे तौर पर शामिल नहीं हुआ था। यह 1940 की बात है, जिस का विस्तार से उल्लेख आयेगा।

"अल जिया" के बदले में मिस्र व सीरिया व लेबनान और ईराक़ के उच्च कोटि की साहित्यिक व इस्लामी पत्रिकायें और कभी–कभी प्रतिष्ठित लेखकों की किताबें टिपपणी (तबसरः) के लिये आती थीं, और सब से पहले मसऊद साहब और मैं और प्रिय मित्र मौलाना मो0 नाजिम साहब नदवी उन को पढ़ते थे। हेलाली साहब का सत्संग तथा इन पत्रिकाओं के अध्ययन और नई किताबों की वजह से मिस्र व सीरिया के साहित्यकार और लेखक (जो एक विशेष विचारधारा के मालिक और रहनुमा थे) हमारे लिये ऐसी जानी बूझी और देखी बरती हस्तियां बन गयीं, जैसे हिन्दुस्तान के साहित्यकार और कलमकार। हमारी बैठकों में उन पर परिचर्चा भी होती और समालोचना भी, तुलना भी, इस का नतीजा यह हुआ कि मैं जब सन् 1951 ई0 में मिस्र गया तो मेरे लिये वहाँ कोई नई खोज का मामला न था और न किसी को देख कर मेरी आँखे चकाचौन्ध हुई और दिमाग पर रोब पड़ा। और यह उस साहित्यिक, इस्लामी तथा जागरूक माहौल का वरदान था जिसका सर्वशक्तिमान की हिकमत ने पहले से इन्तेजाम कर दिया था।

लाहौर और देवबन्द का ठहराव

सन् 1930–31 के बीच दो बार लाहौर हजरत मौलाना अहमद अ़ली साहब से ज्ञानार्जन के लिये गया तो संयोग से वह जमाना उन के बाक़ायदः क्लास (उल्मा का कलास जो शाबान से शुरू होकर जीकादः तक रहता था, और जिस में अरबी मदरसों के आचार्य शामिल होते थे, प्रतिभाग करते थे, और बाकायदा इम्तेहान होता था) का जमाना नहीं था। लेकिन मौलाना ने मुझे विशेष समय दिया, और मैं ने सूरः बक़्रः का प्रारम्भिक हिस्सा पढ़ा। इस पढ़ाई में मेरे सिर्फ एक साथी प्रिय भाई सैयद अहमदुल हसनी थे। अगले साल सम्भवतः सन् 1931 में मैं "हुज्जतुल लाहिल बालेग़ः" की क्लास में सम्मिलित होने के लिये लाहौर आया। इस में बाकायदः शरीक होकर के इम्तेहान दिया और कामयाब हुआ। इसी जमाने में मैं ने मौलाना से बैअत और इरादत (मुरीद होना) का शौक जाहिर किया। मौलाना ने बजाय अपने (अपनी अति विनम्रता व निष्ठा जो उन का विशिष्ट गुण था, के कारण) मुझे एक परिचय पत्र देकर अपने शेख हजरत गुलाम मोहम्मद साहब भावलपुरी की सेवा में दीनपुर (जिला खानपुर) भेज दिया। ख़त में सम्भवतः मेरा खानदानी परिचय और हजरत सैयद साहब का उल्लेख था। हजरत खलीफा साहब ने जिन की उम्र उस समय नब्बे से ऊपर थी, और पंजाब और हिन्दुस्तान के मशायख और ज्ञानी लोगों की नजर में (जिन में हजरत थानवी, मौलाना मदनी और हजरत रायपूरी रह0 सब शामिल हैं) उच्च कोटि के शेख और बुजर्ग थे, और मौलाना मदनी को भी उन से इजाजत हासिल थी। (जिस का उन्होंने खुद मुझ से जिक्र किया) मुझे याद नहीं कि मैं ने अरब व अजम के सफर में उन से बढ़कर किसी का पुरनूर (शौर्यवान) चेहरा देखा हो। हजरत खलीफा साहब ने मुझे सस्नेह बैअत फरमा लिया। और कुछ जिक्र कल्बी (एक प्रकार का जप) भी बताया। यह सन् 1931 ई0 की घटना है। अगले साल सन् 1932 ई0 (1351 हिज्री) में मैं मौलाना मदनी की ख़िदमत में देवबन्द हाजिर हुआ।

(जारी.....)

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

ऊहदः के ख्वाहिशमन्द को ऊहदः न देना चाहिये

हज़रत अबू मूसा अशअरी (र0) से रिवायत है कि मैं नबी (स0) की खिदमत में हाजिर हुआ। मेरे साथ मेरे खान्दान के दो आदमी और थे। उनमें से एक ने अर्ज किया कि जो हुकूमत अल्लाह तआला ने आपको सिपुर्द की है उसमें हमें भी कोई उहदः दीजिये। फिर दूसरे ने भी यही कहा। आपने फरमाया, हम उहदा और हुकूमत उसको नहीं देते जो उसका तालिब हो या जिसको उसकी हिर्स हो।

(बुखारी--मुस्लिम)

❑❑

किस्त : 10

जगानायक

वंश, जन्म तथा शारीरिक विकास

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु0 गुफरान नदवी

जैसा कि ऊपर जिक्र किया जा चुका है तूफाने नूह के बअद जमीन पर सिर्फ हजरत नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल बाकी रही, प्रायद्वीप अरब की आबादी उनके "साम" नामी बेटी की औलाद में बताई जाती है, साम के कई बेटे थे, लेकिन इतिहास कारों के यहाँ सिर्फ दो बेटों की नस्लों का पता मिलता है, उनमें से एक का नाम "आराम" या "अरम" दूसरे का "अरफख़शज़" था[1] अरब प्रायद्वीप में जिनकी नस्लें आगे बढ़ी या जिनका अमल दख़ल रहा उनका सम्बन्ध इन्हीं दोनो बेटों से है। इन में से अरम की कई नस्लें अरब प्रायद्वीप में बहुत दिनों तक जिन्दा रहीं, और तरक्की करती रहीं और उनका बड़ा रोब व दबदबा रहा, लेकिन वह कई बुराईयों में ग्रस्त रहीं और फ़िर तकब्बुर (अभिमान) और जोर दस्ती, शिर्क के जरये अपने परवरदिगार की सख्त नाराजगी की हकदार बनी, उनमें नबी आये और उन्हों ने समझाया और जब नाफरमानी हद से बढ़ गई तो अजाब में ग्रस्त हुई। और एक के बअद दूसरे अल्लाह तआला की नाफरमानी की वज़ह से तबाह होती रहीं। और अखिर में अरब प्रायद्वीप से बिल्कुल मिट गईं। उनको अरबों में "उमम बाइदा" कहा जाता है। उनमें उल्लेखनीय नस्लें आद, समूद, जरहम, तस्म, जदीस, अब्दे जख़्म और अमालका हैं। अमालका के सिलसिले में यह भी कहा जाता है मिस्र के फराइना भी इसी की एक शाख थे। जो उत्तरी अरब प्रायद्वीप से मिस्र स्थानातरित हो गये थे।

"अरफख़शज" की नसल में भी कई शाखे हुईं, उनमें कहतानी नामी नस्ल अरब प्रायद्वीप के दक्षणी क्षेत्रों में आबाद हुई, दूसरी नस्ल में हजरत इब्राहीम और हजरत लूत अलैहिमिस्सलाम और इन दोनो के खानदान हुवे, हजरत इब्राहीम वाली शाख़ इराक के दक्षणी क्षेत्रों में आबाद हुई इसमें शिर्क की सितारह परस्ती की किस्मों का चलन हुवा जिसके विरूद्ध हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आवाज उठाई, और तौहीद (एकश्वरवाद) की दअवत दी, वहीं उनके एक बेटे हजरत इसहक़ अलैहिस्सलमा की औलाद बनी इस्राईल कहलाई, हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने दूसरे बेटे को जो पहले से थे अल्लाह के हुक्म से उनकी माँ के साथ लेजाकर मक्का में ठहराया, तीसरे बेटे मदयन हुवे, उनकी औलाद सीरिया के दक्षणी क्षेत्र में आबाद हुई, उनका इलाका मदयन कहलाया।

इस प्रकार अरब प्रायद्वीप में सबसे प्राचीन निवासी आरामी नस्ल के हुवे उनके बअद कहतानी आए, और उने बअद वह नस्लें जो हजरत इब्राहीम से सम्बन्धित हैं, उनमें हजरत इसमाईल की औलाद मध्य प्रायद्वीप अरब में मक्का और उसके इर्द गिर्द इलाके में आबाद हुई, मदयन की औलाद उनके उत्तरी इलाके हिजाज के उत्तरी किनारे पर आबाद हुई। हजरत इसमाईल की औलाद में कई पुशतों के बअद "अदनान" नामी एक शख़्स हुवे वही बअद में हजरत इसमाईल अलैहिस्सलाम की लगभग तमाम नस्लों के मूरिस (पूर्वज) हुवे।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि आरामी नस्लें प्रायद्वीप अरब की पहली बसने वाली नस्लें थीं जो कुछ जमाने के बअद रहकर अपनी हटधर्मी, अत्याचार और अपने रब की नाफरमानी (अवज्ञा) के नतीजे में आसमानी सजा के हकदार हुई और अधिकाँश अरब प्रायद्वीप से मिट गईं, उनके बअद अरब प्रायद्वीप के नम्बर 2 के प्राचीन निवासी कहतानी नस्ल के लोग हुवे, इसी लिये "कहतान" की औलाद को "अरब आरिबा" अर्थात अस्ली अरब कहा जाता है, अरब प्रायद्वीप में इब्राहीमी खानदान की इसमाईली शाख़ जो अरब प्रायद्वीप में पहुँची, कहतानियों के मुक़ाबिले में जरा बअद में अरब होने के कारण अरब आरिबा के स्थान पर अरब "मुसतअरबह" हैं कही गईं ।

(1) मिर वजुज़–ज़हब, दारूल मअरिफ़, लबनान, बेरूत 2005 ई0

कुरैश का कबीला :

मक्का मुकर्रमा में हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बड़े बेटे हजरत इसमाईल अलैहिस्सलाम को ठहरा कर उनके बड़े होने पर "बैतुल्लाह शरीफ" का निर्माण किया जो भूमण्डल पर अल्लाह तआला का पहला घर कहलाया, हजरत इब्राहीम ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस घर को आबाद रख और हमारी औलाद को इस घर की हिफाजत (रक्षा) की तौफीक (क्षमता) दे, और तौहीद (ऐकेश्वरवाद) का इसको केन्द्र बना, और हमारी औलाद को इस गैर आबाद खित्तो (जनरहित क्षेत्र) में रोजी पहुचा और तमाम मोमिन बन्दों को इस घर मे आकर इबादत करने की तौफीक दे, हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की मकबूलियत (स्वीकृत) का असर था, कि बैतुल्लाह शरीफ की महानता और पवित्रता पर अरब प्रायद्वीप के समस्त वासी सहमति हो गये और हैसियत के अनुकूल वहाँ हाजरी देने लगे और यह अमल "हज" कहलाया इसी तरह मक्का मुकर्रमा का सम्मान उसके दिल में कायम रहा, और वहाँ के निवासी कबीला कुरैश को "बैतुल्लाह" की तवल्लियत (प्रबन्ध) हासिल हुई, इस कारण यह कबीला सबकी नजर में सर्वमान्य हो गया, अतएवं इस कबीले को अपनी इस विशेषता की वजह से अरब प्रायद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में जाने और सफर करने में ख़तरह नहीं महसूस होता था, और सब अरबों के लिहाज से उसी केन्द्रीय हैसियत की वजह से कुरैश का सम्बन्ध विभिन्न कबीलों से भी होता था और वह उत्तर दक्षिण व्यापारिक यात्रा भी करते और वहाँ के निवासियों से उनका सम्बन्ध भी होता।

अतः वह दूसरों की अपेक्षा जीवन की आवश्यकताओं को समझने में अधिक समझदार थे, अशिक्षत और अनपढ़ होने के बावजूद सम्भक्षेत्रों में अपने जाने और वहाँ के लोगों से मिलने जुलने की वजह से दूसरे अरबों के मुकाबले में अधिक उन्नतशील और अनुभवी थे, और इसी हैसियत से देखे जाते थे, कुरैश के एक प्रमुख व्यक्ति कुसई बिन कलाब ने अपनी समझ और योग्यता के कारण मक्का मुकर्रमा में नगर के प्रशासक के रूप में अपनी हैसियत बना ली थी। वर्तमान काल की भाषा में उन्हें नगर का "मेअर" समझा जा सकता है। उनके देहान्त के बअद उनकी नाना प्रकार की प्रबन्धिक जिम्मेदारियाँ उनकी औलाद में विभाजित हो गई थीं, हाजियों की मेहमानी और आवभगत का विभाग हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पर दादा हाशिम बिन अब्दे मनाफ के हिस्से में आया था जो उनकी औलाद में परिवर्ति होता हुवा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुरब्बी (प्रतिपालक) चचा अबू तालिब तक आया था, हाजियों की मेहमानी का यह विभाग ऐसा विभाग था जिस के द्वारा पूरा अरब प्रायद्वीप इस शाख के लोगों को पहचानता और इज्जत की निगाह से देखता था क्यों कि सारे अरब से हाजी आते और सब उनकी मेहमानी से वास्ता पड़ने की वजह से इस शाख (ब्राँच) से वाकिफ (परिचित) हो गये थे।

अल्लाह तआला ने कुरैश को अपनी इस दी हुई नेमत और प्रतिष्ठता का जिक्र अपने कलामे इलाही में कुरैश को संबोधित कर के अपना एहसान बताते हवे फरमाया :

"कुरैश को सफर में उलफत का सहारा दिया, उनको जाड़े और गर्मी के सफर में बड़ी सुहूलत हासिल रही, उन पर लाजिम (अनिवार्य) है कि उनको इस घर के मालिक की इबादत करनी चाहिये, जिसने उनको भूक में खिलाया और उनको खौफ से बचा कर अम्न दिया"

(सूरह कुरैश : 1–4)

वास्तव में इस बड़े इबादते इलाही के केन्द के खादिम (सेवक) और प्रबंधक होने के नाते कुरैश को सारे अरब में सम्मान और प्रतिष्ठा हासिल हुई और कुरैश में से बनू हाशिम को हाजियों के मेजबान (आतिथ्य कर्ता) होने की वजह से अधिक इज्जत मिली, इस दुन्यावी मान, और लोक प्रियता के साथ यह सौभाग्य भी मिला कि अल्लाह तआला ने उनको दूसरे अरबों के मुकाबले में अच्छी विशेषताओं का हिस्सा जियादह प्रदान किया, हुजूर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी कुरैश शाख के महान सपूत हुवे।(1)

❑❑

(1) मिर वजुज़–ज़हब, दारूल मअरिफ, लबनान, बेरूत 2005 ई0

हिजाब हमारा गर्व भी है और हमारा अधिकार भी

डॉ0 रुख़साना जबीं

हिजाब यानी पर्दा मुस्लिम उम्मत की पहचान और मुस्लिम महिलाओं की एक विशेषता है। यह मुस्लिम समाज की पाकीजगी का एक माध्यम था, और आज भी है। आज साम्राज्यवादी शक्तियों की वर्षों से चली आ रही साजिशों के नतीजे में असके खिलाफ आवाज उठ रही है। मुस्लिम मिल्लत को पाकीजगी से दूर करके अश्लीलता के दलदल में धकेलना और महिलाओं को तरक्की के नाम पर बेपरदा करना शैतानी शक्तियों का हमेशा से ही लक्ष्य रहा है। शैतान की सबसे पहली चाल जो उसने मानव स्वभाव को सीधे मार्ग से भ्रमित करने के लिये चली थी, यह थी कि उसकी शर्मोहया पर चोट की जाए। उसके चेले उसकी इस नीति पर आज भी कायम हैं।

उनके यहाँ प्रगति एवं विकास का कोई काम उस समय तक पूरा नहीं होता जब तक औरत पर्दे से बाहर न आ जाए। हया को दक़यानूसियत और परदे को प्रगति के मार्ग में रुकावट करार दिया जाता है। बुर्का और चादर का तरह–तरह से मजाक उड़ाया जाता है। उसे मुस्लिम महिला पर जुल्म, अत्याचार और कैद की अलामत करार दिया जाता है लेकिन दूसरी ओर पश्चिम उससे कुछ इत तरह भयभीत हैं जैसे यह काई बम हो जो उन्हें तबाह कर देगा।

हिजाब (पर्दा) क्या है?

हिजाब के शाब्दिक अर्थ किसी दो चीजों के बीच किसी ऐसी चीज के आ जाने वाली चीज है जिसके कारण दोनों एक–दूसरे से ओझल हो जाएं। इस्लामी दुन्या की शब्दावली में यह शब्द उस समय प्रचलित हुआ जब अल्लाह तआला ने अपने बन्दों में सबसे नेक और पाकीजा बन्दों को यह आदेश दिया– "नबी करीम (सल्ल0) की पत्नियों से यदि तुम्हें कुछ माँगना हो तो परदे के पीछे से माँगा करो। यह तुम्हारे और उनके दिलों की पाकीजगी के लिए ज्यादा मुनासिब तरीका है।

इस आयत को 'आयते हिजाब' कहते हैं। इसके अवतरित होने के बाद आप (सल्ल0) की पाक पत्नियों ने अपने घरों के दरवाजों पर परदे लटका दिये। फिर उनकी देखा–देखी दूसरे मुस्लिम घरानों में भी यही तरीका प्रचलित हो गया।

इस में समाज की पाकीज़गी के लिये उसी तरह दूसरे आदेश नाजिल हाते रहे जिनमें औरतों और मर्दा के कार्यक्षेत्र को सपष्ट किया गया। औरतों की बुनियादी जिम्मेदारी घर के अन्दर के काम और अपने बाल–बच्चों की देखभाल करार पायी और बाहर की मेहनत वाली जिम्मेदारी मर्दो को दी गयी।

औरतों से कहा गया कि घर से बाहर अगर जरूरत से निकलना हो तो परदे में निकले ताकि घर और पररिवार की व्यवस्था को पाकीजा और मुस्तहकम बनाया जा सके और समाज को टूटने से बचाया जा सके। इसमें परिवार की व्यवस्था, पुरुषों का वर्चस्व, मर्दों एवं औरतों की पोशाक और घर के अन्दर और बाहर निकलने के कानून महरमों और न महरमों के बीच अन्तर और अपनी इस्लाह के लिये अनेक अहकामात शामिल हैं।

इतिहास साक्षी है कि जिस–जिस दौर में समाज अल्लाह तआला के नाजिल किये हुए इन उसूलों एवं कानूनों के पाबन्द रहे वे उन तमाम सामाजिक एवं परिवारिक समस्याओं से बड़ी हद तक सुरक्षित रहे जिनमें आज का इन्सान घिरा हुआ है। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) का बताया हुआ हया और हिजाब (पर्दा) का रास्ता पाकीजगी का रास्ता था। बेहयाई और बेपरदगी शैतान की चाल थी जिमें फंस कर परिवार तोड़–फोड़ का शिकार होते चले

जा रहे हैं और सामाजिक जीवन में समस्याएं बढ़ती चली जा रही हैं।

आइये विचार करें। अल्लाह के नाजिल किये गये जीवन व्यवस्था में परदे और हिजाब के आदेश किस हिकमत के तहत दिये गये हैं और उसके अन्दर हमारे लिये कितनी बरकतें और रहमतें छुपी हुई हैं?

हिजाब केवल सिर पर रखे जाने वाले डेढ़ गज कपडे का नाम नहीं है। बल्कि यह आदेशों का एक संग्रह है जिसमें निगाहें नीची रखने के आदेश से लेकर घर के अन्दर और घर के बाहर के पर्दे की व्याख्या के साथ–साथ आवाज और खुशबू में एहतियात के मुतल्लिक आदेश भी शामिल हैं।

यह इस्लाम के निजामें इफ्फत व इस्मत का नाम है जो समाज को पाकीजगी बख़्शता है महिलाओं को ससम्मान देता है। परिवारों को सुरक्षा और स्थायित्व प्रदान करता है। आपसी एतिमाद बहाल होता है जिससे मुहब्बतों में इजाफा होता है।

इस्लाम दीने फितरत है लिहाजा इस्लामी व्यवस्था न तो प्राचीन जिहालत व अज्ञानता वाले समाज की भांति इन्सान की मूल इच्छाओं एवं आवश्यकताओं तक पर रोक लगाता है, न आज के आधुनिक एवं रोशन ख्याल समाज की भांति इतनी आजादी प्रदान करता है कि वे जानवरों को भी शर्मा दें। इस्लामी व्यवस्था तो संतुलन पर कायम है; जो दुनिया के लिये अस्ल रौशनी और खैरो–बरकत का कारण है।

हिजाब मुस्लिम दुनिया में विभिन्न शक्लों में पाया जाता है। भारत उपमहाद्वीप में महिलाएं बुर्का पहनती है। अफगानिस्तान और ईरान में 'रिदा' यानी 'चादर' का प्रचलन है। अरब देशों में 'उबाया' सीरिया में 'मन्दैल' और कुछ क्षेत्रों में जलबाबा' और यूरोप में 'गाउन' स्कार्फ और वेल (Veil) कहा जाता है । पर्दा मुसलमानों के अकीदे को दर्शाता है। यह मुसलमान औरतों की पहचान और मोमिन औरत की निशानी है वह जानती है कि पर्दा तकवा और इस्लाम का शियार है। हिजाब एक सदफ है जो पाकीजा औरत को एक मोती की तरह अपने अन्दर छुपाकर उसकी कद्रोकीमत में इजाफा कर देता है।

पश्चिमी दुनिया के नजदीक पर्दा एक बोझ है जिसके नतीजे में मुस्लिम महिला दबी पड़ी है। मर्द आजाद हैं और औरत को चादर और चारदीवारी में कैद कर दिया गया है।

आइये देखें कि स्वयं पर्दा में रहने वाली मुस्लिम महिलाएं इस सिलसिले में क्या कहतीं हैं? विशेषकर नवमुस्लिम महिलाएं जो स्वयं उन्हीं आजादी भरे माहौल में रहने वाली हैं जहां उन पर कोई जोर–जबरदस्ती नहीं।

एक महिला पत्रिका (मासिक) के एक सर्वे में 60 से अधिक ऐसी ही माहिलाओं ने परदे से मुताल्लिक अपने विचारों का इजहार किया।

✔ परदा करने के बाद रब्बुल आलमीन ने सुरक्षा का वह एहसास दिया जिनका शब्दों में बयान करना संभव नहीं।

✔ परदा करने से मेरे अन्दर आत्मविश्वास पैदा होता है। अब मैं अपने आपको स्वतंत्र महसूस करती हूँ। मैं समझती हूँ कि शैतान और उसके साथियों से सुरक्षा के लिये पर्दा एक मजबूत किला है। यह हिजाब ही है जो औरत को समाज में सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

✔ परदा समाज में अश्लीलता की जड़ काट देता है और एक पाकीजा समाज के कियाम में बुनियादी हैसियत रखता है। पर्दा औरत के लिये जरूरी है जो शैतान के हमलों से सुरक्षित रखता है।

✔ हिजाब अल्लाह की तरफ से ईमान के बाद खूबसूरत तरीन तोहफा है जो औरत को मिला है। पर्दा औरत की इज्जत व नामूस के लिये एक ढाल है।

✔ परदा खालिक व मालिक की इताअत में किया जाता है। यह अल्लाह के साथ ताल्लुक बढ़ाता हैं और पारिवारिक जीवन में पाकीजगी की वजह बनता है।

उस काबा के रब की कसम! जिसने हिजाब हमारे ऊपर फर्ज किया है, यह हमारे लिये न इल्म हासिल करने में रुकावट बना, न तरक्की में। पढ़ी–लिखी समझदार परदे वाली महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि हमने मेडिकल की तालीम में 'हाउस जॉब क्लीनिक' सभी कुछ पूरे परदे में किया। हमारी साथियों

ने विश्वविद्यालयों में उच्च पोजीशन भी हासिल की। आज वे पठन–पाठन में लगी हुई हैं। रिसर्च स्कॉलर भी हैं। अन्य संस्थानों में भी काम कर रही हैं और विधान सभाओं में भी अपने कर्तव्य निभाने को मौजूद हैं।

दूसरी ओर पश्चिम मुस्लिम महिलाओं के परदे से भयभीत होकर जबरदस्ती पाबन्दियाँ लगाकर अपने दोहरे मेयार और इस्लाम दुश्मनी का सबूत दे रहा है। पश्चिम में एक ओर औरत को हर तरह की आजादी हासिल है। उस पर किसी प्रकार की कोई पाबन्दी नहीं।

दूसरी तरफ जब एक मुसलमान औरत हिजाब में बाहर आना चाहती है तो उसके लिये कोई व्यक्तिगत आजादी नहीं। लड़कियों को हिजाब की वजह से स्कूलों से निकाला जा रहा है। हिजाब की वजह से नौकरियाँ नहीं दी जा रहीं। हवाई अड्डों पर उनके साथ अनुचित व्यवहार किया जाता है। बाजारों में उनके साथ तौहीन आमेज़ सलूक किया जाता है। परदे में होने के कारण साँसद पद से आयोग्य करार देने की बातें की जाती हैं। फ्राँस के राष्ट्रपति ने हिजाब के खिलाफ ऐलाने जंग कर रखा है और अभी हाल ही में मिस्र की एक औरत की भरी इदालत में इस लिये हत्या कर दी गयी क्योंकि वह हिजाब में थी।

मानवीय अधिकार एवं व्यक्तिगत अधिकार का राग अलापने वाले पश्चिमी समाज का यही मकरूह चेहरा है। परन्तु मुबारकबाद है वहाँ की उन मुस्लिम बहनों के लिये जो हर हाल में स्थायित्व के मार्ग पर खड़ी हैं। विशेषकर वे नवमुस्लिम महिलाएं जो मुकदमों का सामना कर रही हैं; नौकरियों से निकाली जा रही हैं, लेकिन तमाम विरोधों और कष्टों के बावजूद अपने मैकिफ पर डटी हैं। उन्होंने तमाम कठिनाइयों एवं पाबन्दियों के बावजूद बेपर्दा रहने से इन्कार कर दिया है। उन्हें इस पर गर्व है। सेक्युलर जीवन की झूठी और धोखा देने वाली जिन्दगी को वे पूरी तरह नकार रही हैं। मानो वे अपने अमल से यह ऐलान कर रही हैं कि यह इस्लाम औरतों को मजलूम बनाता है तो यूरोप, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया बल्कि सारी दुनिया के सभ्य कहे जाने वाली पढ़ी–लिखी महिलाएं क्यों इस नाममात्र की आजादी और सम्प्रभुता को त्याग कर इस्लाम स्वीकार करतीं।

वे जानती हैं कि हिजाब इस्लाम का शियार, तकवा और शर्मोहया की अलामत है। यह चादर है और चहारदीवारी के आदेश औरत की सुरक्षा व इज्जत में वृद्धि के लिये है। ऐ मुसलमान बहनो! आओ, अपने अल्लाह के आदेश पर लब्बैक कहते हुए यह सुनिश्चित करें कि अल्लाह के आदेश पर अमल करते हुए बाहया और बाहिजाब जिन्दगी बसर करेंगे और उन गाफिल लोगों के लिये नमूना और मिसाल बनेंगे जो अल्लाह के आदेशों को भुला बैठे हैं।

❑❑

मुहर्रमुल हराम

आपने यज़ीदियों से मुतालबा किया कि हम को यज़ीद के पास भेज दो या, मक्का वापस जाने दो, या किसी सरहद की तरफ़ जाने दो लेकिन उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद कमबख़्त ने एक न सुनी। नतीजा वाज़ेह था कहाँ चार हजार मुसल्लह फौज कहाँ 72 तीर तलवार वाले मगर उन्हों ने बुज़दिली नहीं दिखाई एक एक फ़र्द ने आखिरी साँस तक शजाअ़त व बहादुरी का मुज़ाहरा किया आख़िर कार शहीद हुए इन्ना लिल्लहि व इन्ना इलेहि राजिऊन।

इब्नि ज़ियाद कम्बख्त ने ग़मज़दा क़ाफिले के साथ अच्छा मुआमला न किया, आख़िर में यज़ीद के दरबार में पहुँचा कर इनआ़म चाहा मगर यज़ीद ने इब्नि ज़ियाद पर लअ़नत भेजी, यज़ीद ने ज़ाहिर यही किया यह बहुत बुरा हुआ मैं यह नहीं चाहता था, मैं वहाँ होता तो हज़रत हुसैन को बचाने की इन्तिहाई कोशिश करता लेकिन यज़ीद के दिल में क्या था अल्लाह ही बेहतर जानता है। अगर वह इब्नि ज़ियाद को कोई सज़ा देता तो बेशक उस का दामन पाक समझा जाता।

हम को चाहिये कि हम शुहदा के लिये मग़फ़िरत की दुआ करें कुछ खर्च कर के उन को सवाब पहुंचाए उन के दर्जे बुलन्द हैं, इन अ़मा़ल से हम सवाब के मुस्तहिक़ होंगे मगर तअ़ज़िया दारी वग़ैरह बिदआ़त से बचें और दूसरों को भी समझा कर बिदआ़त से बचाएं।

❑❑

केवल सुन्नियों हेतु

तअ़ज़ियादारी अवैध

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

तअ़ज़ियादारी नहीं जाइज़ है सुन लो दोस्तो
पद्य में भाषण मेरा तुम इस विषय पर लो सुनो
हज़रते हम्ज़ा चचा हज़रत रसूलुल्लाह के
उहुद में लड़ते हुए जन्नत में दाख़िल वो हुए
चीर कर उन का कलेजा हिन्दा ने बाहर किया
नाक फिर काटी गई और कानों को काटा गया
कुछ न कहना हिन्दा को तुम वो तो ईमां ला चुकीं
और रसूले पाक से वो तो मुआ़फ़ी पा चुकीं
कितना ग़म था सोच लो हज़रत रसूलुल्लाह को
तअ़ज़िया रखा न हज़रत ने चचा की याद को
हज़रते फ़ारूक़ मस्जिद में पढ़ाते थे नमाज़
था अबूलूलू छुपा मेहराब में ले कर कटार
जब हुए महवे क़िराअत हज़रते वाला तबार
काफ़िरे मुतलक़ ने उस दम कर दिये दो तीन वार
यक मुहर्रम को शहादत इससे हज़रत की हुई
ग़म सहा सब ने मगर ना तअ़ज़िया रखा कोई
बाग़ियों ने हज़रते उस्मान का घेरा किया
इक महीने से ज़ियादा झगड़ा ये चलता रहा
दाना पानी बन्द था अन्दर तो जा सकता न था
एक लोटा पानी कोई ले के जा सकता न था
जो रसद कुछ ले के जाता बाग़ी उसको रोकते
गर नहीं वो मानता तो लड़के उसको रोकते
बाग़ियों को कुछ मदीने का नहीं अब पास था
जो नसीहत उन को करता बस नतीजा यास था
जब सहाबा ने कहा क्यों बाग़ियों से ना लड़ें
बोले हज़रत कल्मा पढ़ने वालों से कैसे लड़ें
जान का ख़तरा खुला महसूस जब सब ने किया
तब सहाबा पूतों ने मिलकर किया इक मश्वरा
द्वार पर उन के खड़े हस्नैन फिर दरबान थे
और सहाबा पूत कुछ वां पर बने दरबान थे
पीछे के कोठे से बाग़ी घर में दाख़िल हो गये
बध किया हज़रत को और ख़ुद दोज़ख़ी वो बन गये
वाक़िआ़ ये सख़्त था आपस में दो जंगें हुईं
दोनों जंगों में सहाबा की बहुत जानें गईं
ग़म सहाबा को तो ये ता ज़िन्दगी भूला नहीं
पर किसी ने देख लो इक तअ़ज़िया रखा नहीं
जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ने के लिए हज़रत अ़ली
सीधे मस्जिद जा रहे थे बे खटक अपनी गली
रास्ते में बैठा था वां ताक में इक ख़ारिजी
उस की क़िस्मत में शक़ावत और थी दोज़ख़ लिखी
ना ख़लफ़ ने कुछ न सोचा वार हज़रत पर किया
वां क़सम खा कर के, फ़ुज़्तु सुन लो हज़रत ने कहा
ग़म मे डूबे थे सहाबा और हसन हज़रत हुसैन
हर मुसलमां रो रहा था दिल को उस के था न चैन
तअ़ज़िया रखा नहीं लेकिन किसी ने याद में
ग़म रहा हस्नैनको बेशक अ़ली की याद में
जब हसन इब्ने अ़ली को ज़हर दे मारा गया
तब हुसैन इब्ने अ़ली का ग़म से दिल पारा हुआ
पर हुसैन इब्ने अ़ली ने देख लो फिर क्या किया
तआजिया रखा नहीं था और ना मातम किया
करबला में जब हुसैन इब्ने अ़ली घेरे गये
ज़ालिमों ने ज़ुल्म ढाया वो शहादत पा गये
मत कहो मुर्दा शहीदों को कहा कुर्आन ने
वो तो ज़िन्दा हैं बयां है साफ़ ये फ़ुर्क़ान में
इक चहीते उन के बेटे थे अ़ली इब्ने हुसैन
ग़म न भूले ज़िन्दगी भर थे अ़ली इब्ने हुसैन
ज़िन्दगी भर ग़म रहा पर तअ़ज़िया रखा नहीं
इस लिये कि हुक्म इस का है शरीअ़त में नहीं
क़त्ल जिनने था किया वो तअ़ज़िया रखने लगे
नौहा मातम कर के वो अब उनका दम भरने लगे

शेष पृष्ठ 21

किस्त 20

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिय

– डॉ. सलामत उल्लाह

शिशु–शिक्षा और संयोजन विधि

प्रयोग से मालूम हुआ है कि संयोजन विधि शिशु–शिक्षा में बहुत कामयाब होती है। इस का कारण क्या है? रेमान्ट ने इस पर विस्तार से लिखा है। वह अपनी किताब "शिक्षा के सिद्धान्त में लिखता है" बच्चा प्राकृतिक और सामाजिक दुनिया को जिस में आये हुए उसे अधिक समय नहीं हुआ है, बड़े बच्चों या प्रोढ़ों की तरह नहीं देखता। उस के नजदीक दुनिया एक "अविभाजित कुल" की हैसियत रखती है। वह अभी उसे विभिन्न कोणों से देखने की क्षमता नहीं रखता कि कभी भुगोल के दृष्टिकोण से देखे कभी इतिहास कभी सौन्दर्य से। विषय जिन के सम्बन्ध में हम प्रौढ लोग अक्सर बातें करते हैं और जो दरअसल दुनिया को देखने के विभिन्न तरीके हैं, शिशु के लिये कोई अस्तित्व नहीं रखते। वह अभी "प्रकृति" की उन चीजों में जो इन व्यस्तताओं को पूरा करने के सिलसिले में इस्तेमाल की जाती हैं। अब इस सोपान में और सोपानों (स्टेजेज) की तरह हमें बच्चे को बच्चे की हैसियत से देखना चाहिये। उस के माहौल के किसी भाग को चुन कर उसे इन्सानी दिलचस्पियों से ससज्जित करना चाहिये, और उसे इस तरह पेश करना चाहिये कि बच्चा उसे धीरे–धीरे विभिन्न कोणों से देखने के काबिल बने। नतीजा यह होगा कि ड्राईग और मिट्टी का काम, कविता और काहनी, गिनती का पाठ और पढ़ने लिखने का अभ्यास और तमाम जरूरी बातें एक ही केन्द्रीय व्यस्तता से जुड़ी हुइ उत्पन्न होंगी। अनुभवी शिक्षक अच्छी तरह जानते हैं कि बच्चों को शुरू में यह मालूम नहीं होता कि जो बातें वह सीख रहे हैं किस विषय से सम्बन्धित हैं। उन के नजदीक विभिन्न विषयों के नाम जैसे समाजिक ज्ञान, सामान्य विज्ञान आदि कोई महत्व नहीं रखते, यद्यपि वह उन चीजों को अच्छी तरह समझते हैं जो टीचर उन्हें इन विषयों के अन्तर्गत सिखाते हैं। विषयों का अलग–अलग अस्तित्व टीचर के दिमाग में होता है न कि बच्चों के दिमाग में। बच्चे तमाम बातें चाहे वह किसी विषय से सम्बन्धित हैं किसी काम के सिलसिले में सीखते हैं। इस से जाहिर है कि बच्चे स्वाभाविकि रूप से सिर्फ जुडी हुई (संयोजित) जीजें ही सीख सकते हैं। संयोजन विधि में मानसिक शक्ति की बड़ी बहस होती है और बहुत अधिक कठिनाईयों के बिना बच्चा आजादी से इल्म व ज्ञान की राह पर आगे बढ़ता चला जाता है। यदि असम्बन्धित बातें जबरदस्ती ठूंसने की कोशिश की जायेगी तो इस का नतीजा बच्चे के हक में कभी लाभप्रद नहीं हो सकता।

साराँश

इस बहस से यह बात साफ हो गयी है कि सिर्फ यही काफी नहीं कि एक विषय के विभिन्न शाखाओं में संयोजन स्थापित किया, जाये, जैसे गणित के हिस्सों, हिसाब की बीज गणित और ज्योमेट्री में या भाषा के हिस्सों, पढ़ने लिखने, निबन्ध लेखन तथा व्याकरण में यह सम्बन्ध सुस्पष्ट हैं। अब तो इस बात की जरूरत है कि स्कूल की तमाम व्यस्तताओं में पारस्परिक रिश्ता पैदा किया जाये। जैसे निबन्ध लेखन के लिये विषय चुनते समय अन्य विषयों तथा स्कूल के बाहर के जीवन से भी मदद लेनी चाहिये। कला इन तमाम विषयों से जुड़ सकती है जिन्हें हम नजरी कहते हैं। इसी तरह हाथ के काम के जरियों दूसरे विषयों की टीचिंग हो सकती है। इसे मात्र कारीगर या कलाकर की हैसियत से सिखाना इस के उच्च शैक्षिक उद्देश्य की अनदेखी कर देने के बराबर है।

रेमान्ट के नजदीक संयोजन का सही उसूल यह है कि किसी विषय पर सबक या सबकों का एक सिलसिला देते समय ठीचर्स को तमाम सम्बन्धित विषय–वस्तु से मदद लेनी चाहिये जो विचारा धीन विषय को स्पष्ट रूप से समझने में सहायक हो सकता है। ऐसा करते समय उसे इस बात से नहीं डरना चाहिये कि वह विभिन्न विषयों को मिला रहा है क्योंकि यह विषय वास्तव में मालूमात को विभिन्न शाखों में बाँटने के आसान तरीके है। सेकेन्ड्री स्कूलों में जहाँ सामान्यतः विषयवार टीचर होते है। वहाँ भी संयोजन की यह विधि काम मे लायी जा सकती है। मिसाल के तौर पर इतिहास का टीचर, भूगोल, ड्राईंग, साहित्य और मालूमात से बिला झिझक मदद ले सकता है, बशर्ते कि ऐसा करने से इतिहास के उस हिस्से को समझने में मदद मिलती हो। प्राथमिक स्कूल में तो पाठयक्रम को इस प्रकार क्रमबद्ध करने की जरूरत है कि किसी क्लास के एक दिन के पूरे काम में रब्त (संयोजन) हो अर्थात एक व्यस्तता दूसरी से निकलती है। और दूसरी तीसरी से और इसी प्रकार तमाम व्यस्ततायें एक दूसरे से सम्बन्धित हों। सिर्फ यही काफी नहीं कि प्रत्येक दिन का काम अपनी जगह संयोजित हो, बल्कि एक दिन के काम को दूसरे दिन के काम से और एक सप्ताह के काम को दूसरे सप्ताह के काम से और एक महीने के काम को दूसरे महीने के काम से गहरा सम्बन्ध होना चाहिये। इस प्रकार की क्रमबद्धता का उल्लेख हमने तीसरे अध्याय में भी किया है।

संयोजन की एक मिसाल

बेहतर होगा कि हम इसे एक मिसाल से स्पष्ट कर दें। नीचे हम पाठयक्रम की एक तरतीब पेश करते हैं जो बेसिक शिक्षा की कक्षा एक से सम्बन्धित है। संक्षेप की खातिर हम एक पाठसक्रम के सिर्फ एक हिस्से को लेंगे जो एक महीने के काम के लिये काफी होगा।

नोट : बुनियादी शिक्षा के पाठयक्रम में कताई और बागबानी अनिवार्य क्राफ्ट की हैसियत रखते हैं। पहले पहल जब बच्चे से सूत कातने को कहा जायेगा तो उसे कपास से सम्बन्धित कुछ बातें बताई जा सकती हैं। इस लिये हम प्रस्ताव करते है कि 'कपास बोने के तरीके' से काम की शुरूआत की जाये।

विषय, विषय वस्तु, संयोजन की विधि

विषय : क्राफ्ट(कताई और बागबानी)

विषय वस्तु : कातने के कार्य के प्रारम्भिक सोपान, तकली घुमाना, बनी हुई पूनियों से कातना, कातते समय याद करने वाली बातें बताना।

पौध घरों, पौधों का निरीक्षण क्राना, वहाँ से कुछ पौधे लाकर गमलों में लगाना।

कपास बोने का निरीक्षण कराना।

संयोजन की विधि : यह बताना कि जो चीज बच्चे कातते हैं रूई कहलाती है रूई कपास से प्राप्त होती है। कपास कैसे पैदा होती है, किस तरह बोई जाती है? खेत पर ले जाकर दिखाना। जिस प्रकार किसान खेत में कपास बोता है, उसी प्रकार स्कूल की वाटिका में बड़े बच्चे और टीचर्स पौधे लगाते है, इन का दिखाना।

विषय : सामान्य विज्ञान

विषय वस्तु : स्कूल की वाटिका में पौधे कैसे लगाये जाते हैं? इन के कौन–कौन से हिस्से होते हैं?

इन के बढ़ने के लिये किन किन चीजों की जरूरत होती है? पानी किन स्रोतों से प्राप्त होता है?

विषय : भाषा

विषय वस्तु : कहानियाँ और संवाद ड्रामे करना, कविता पाठ।

संयोजन की विधि : और लिखी हुई बातों से सम्बन्धित कहानिया, संवाद और ड्रामे तैयार कर के बच्चों से अदा कराना। कताई और खेती बाड़ी से सम्बन्धित कुछ कवितायें याद कराना और काम करते हुए गाने की मश्क कराना।

विषय : हिसाब

विषय वस्तु : दस तक गिनती सिखाना और मश्क कराना

संयोजन की विधि : कताई और बागबानी का काम बाँटते और काम के बाँटते और काम के लिये बच्चों की रोलियाँ बनाते समय औजार और बच्चों को गिनवाना। काते हुए सूत के तारो या बोने के बीजों की गिनती कराना।

विषय : सामाजिक ज्ञान

विषय वस्तु : महान जोदड़ो के एक लड़के की कहानी (मौखिक)।

संयोजन की विधि : हमारे मुल्क

में कताई और खेती बाड़ी का काम अब से बहुत पहले (5000 साल पहले) होता था जब कि दुनिया के अक्सर मुल्कों के रहने वाले जंगली जानवरों की तरह जीवन गुजारते थे, इसका सबूत मोहन जोदड़ो (सिन्ध) में निकली हुई चीजों से मिलता है।

कताई और बागबान के काम के दौरान में। बागबानी के सिलसिले में।

नाम नेहाद का संयोजन

इतना कहने के बाद उस नाम नेहाद संयोजन से आगाह कर देना भी जरूरी है जो उपरोक्त शर्तों को पूरा नहीं करता और सिर्फ खींच तान के और ढूंस ढाँस कर पैदा किया जाता है। यह बड़ी हास्यास्पद बात है कि हम किसी ऐतिहासिक लडाई के सिलसिले में खर्च और सिपाहियों की संख्या से गणित का अभ्यास कराने लगें या यह कि कोलम्बस की यात्रा के सिलसिले में दुनिया की पैदावार बढ़ाना शुरू कर दें, क्यों कि इन सूरतों में गौण विषय, प्रारम्भिक विषयों के समझने में मदद देने के बजाय रूकावट डालते हैं। इसी प्रकार क्राफ्ट से पाठ को संयोजित करने में भी भरक संकते है जैसे इस्कीमो के जीवन के हालात बताने के लिये यह कहना कि कपास का रंग बर्फ की तरह होता है और इस्कीमो के देश में बर्फ ही बर्फ है, ठीक नहीं है। टीचर यह समझने में अपने आप को धोखा देता है कि कताई से जोड़ दिया है। इसे रब्त की नहीं बल्कि खब्त कहना ज्यादा मुनासिब होगा।

सुझाव : संयोजन की परिकल्पना को और स्पष्ट करने के लिये निमन्लिखित का अध्ययन किया जाये :– 1. **बुनियादी कौमी तालीम**– प्रकाशक मकतबः जामिया लिमिटेड, देहली। 2. **एक कदम आगे**– प्रकाशक हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्द्धा। 3. **दो साल का काम**– प्रकाशक। 4. **प्रिंस्पुल्स आफ एजूकेशन**– रेमन्ट–अध्याय दस।

(जारी)

❑❑

तअ़ज़ियादारी अवैध

दीन से वाकिफ़ न थे जो उन की सी करने लगे
सुन्नी थे लेकिन अ़मल से वो शिआ बनने लगे
दीन के आ़लिम उठे फिर और कहा ये साफ़ साफ़
तअ़ज़िया जाइज़ नहीं है बात ये बिल्कुल है साफ़
अअ़ला हज़रत ने बरेली से यही फ़त्वा दिया
उन के बेटे मुस्तफ़ा ने भी यही तो है लिखा
है लिखा अमजद अ़ली ने साफ़ इसको बर्मला
और फिर हशमत अली का भी यही फत्वा रहा
आ़लिमों ने सब बरेली के यही मिल कर कहा
तअ़ज़िया जाइज़ नहीं है, यह है शरअी फ़ैसला
हों मज़ाहिर के पढ़े नदवी हों या कि क़ासिमी
तअ़ज़िया जाइज़ नहीं ये, हैं यही कहते सभी
भाइयो अब ध्यान दो गर तअ़ज़िया रखते हो तुम
तो हुसैन इब्ने अ़ली के रब से हां फिरते हो तुम
गर ख़फ़ा हो गा ख़ुदा होंगे ख़फ़ा तुम से हुसैन
गर खुदा राज़ी रहा तो होंगे खुश तुम से हुसैन
तौबा कर लो आज ही से तअ़ज़िया रखो नहीं
क्या हुसैन इब्ने अली से तुम को उल्फ़त है नहीं
गर महब्बत है तुम्हें आले नबी से दोस्तो
अपने मन की मत करो तुम पैरवी उनकी करो
मैं भी तो था मुद्दतों तक तअ़ज़िया रखता रहा
ढोल ताशे भी बजाये और मातम भी किया
मुफ़्तियाने दीन से जाइज़ नहीं है जब सुना
मैं हूं पापी दिल में सोचा तौबा की रोने लगा
है दुआ दिल से कोई अब तअ़ज़िया रखे नहीं
सुन्नी होकर रास्ते से अब कोई भटके नहीं
अब नबी पर अपने भेजें आओ हम मिल कर सलाम
अपने रब से दिल से मांगे आप पर रहमत मुदाम

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु0 ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्न : क़ुर्आन मजीद में आया है "व अल्लैस लिल् इन्सानि इल्ला मा सआ" (53 : 39) (और यह कि इन्सान को सिर्फ़ वही मिलता है जिस की उसने सई (कोशिश) की, तो ईसाले सवाब (फातिहा) से या इस्तिग़फ़ार से दूसरों को क्या फ़ाईदा पहुंचे गा?

उत्तर : इन्सान की अ़क्ल ऐसी नहीं है जहाँ चाहे अपने क़यास से फैसला कर बैठे। ईसाले सवाब सहीह़ हदीस से साबित है, और दुआ़ए मगफ़िरत तो क़ुर्आन मजीद से साबित है। तर्जमाः "ऐ अल्लाह हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हमारे उन भाइयों की मग़फ़िरत फ़रमा जो हम से पहले ईमान ला चुके।" (59:10)

दुआ़ और सदके का पहुँचना मुत्तफ़क़ अ़लैहि और शारिअ़ की तरफ़ से मन्सूस है। ह़ज़रत अबू हुरैरा से मुस्लिम में रिवायत है कि आप सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मौत के बअ़द भी इन्सान के तीन अ़मल मुनक़तिअ़ नहीं होते, एक नेक लड़का जो उस के लिये दुआ़ करे, दूसरे वह सदक़ा जिस का नफ़अ़ उस के बअ़द भी जारी रहे, वह इल्म जिस से नफ़अ़ उठाया जाता रहे।

(मुख़तसर इब्नि कसीर, 3 : 404)

आप (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला जन्नत के अन्दर नेक बन्दों के दरजे ऊँचे कर देगा बन्दा कहेगा पालनहार! मेरे दर्जे में यह बुलन्दी कैसे हुई, इरशाद होगा तेरे बेटे तेरे लिये दुआए मग़फ़िरत की थी लिहाजा तेरा दर्जा बुलन्द कर दिया गया।

(तिबरानी अ़न अबी हुरैरा)

एक रिवायत में है कि कब्र के अन्दर (कुछ) मुर्दों की कैफ़ीयत ऐसी होती है जैसे डोबते को तिनके का सहारा, वह माँ–बाप और मुतअ़ल्लिक़ीन की दुआ़ का मुंतज़िर रहता है, जब कोई दुआ़ करता है और वह पहुँचती है तो यह दुआ़ उस के लिये दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर होती है। दुन्या वाले (मोमिनीन) की दुआ़ कब्र वालों के ह़क में पहाड़ जैसे अज्र व सवाब के बराबर हो जाती है। और मुर्दो के लिये जिन्दो का हदीया (उपहार) यही दुआए मगफिरत है।

(बैहक़ी व दैलमी अन रब्नि अब्बासा)

एक शख़्स ने आप (सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से अ़र्ज किया कि मेरी माँ कुछ वसीयत किये बिना फौत हो गई, फिर भी ऐसा लगता है अगर उन को बात कर सकने का मौकअ़ मिलता तो वह कुछ ख़ैरात करने को ज़रूर कहतीं। अब अगर मैं उन की तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उनको सवाब पहुँचे गा? आप (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया हाँ। (बुख़ारी)

ह़ज़रत सअ़द बिन इबादा (रजि0) ने पूछा कि क्या मैं अपनी वालिदा की तरफ से सदक़ा करूं तो उन को सवाब पहुँचे गा? आप (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया हाँ। चुनाँचि हजरत सअद ने उसी वक्त एक बाग मरहूमा की तरफ से सदका कर दिया। (बुख़री) लिहाजा सदकात के ज़रीअ़े इसाले सवाब में फुक़हा के बीच कोई इख़्तिलाफ़ (मत–भेद) नहीं।

ह़ज्ज जो माली व बदनी इबादत है उस के इसाले सवाब में भी कोई इख़्तिलाफ नहीं। एक औ़रत ने नबी (सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से पूछा कि मेरी माँ की वफ़ात (मौत) हो चुकी है क्या मैं उस की तरफ से हज्ज कर सकती हूँ? इरशाद हुआ कि अगर उस पर कुछ कर्ज होता तो अदा करती या नहीं? अ़र्ज़ किया क्यों नहीं। फरमाया इसी तरह ह़ज्ज है और ह़ज्ज का हुक्म फ़रमाया।

(तिबरानी अन उक्बा बिन आमिर)

इसी तरह एक सुवाल एक साहिब ने अपने वफात पाए बाप के बारे में पूछा तो आप ने उस को भी यही जवाब दिया।

(तिबरानी अन अनस)

रही खालिस बदनी इबादत जैसे तिलावते कुर्आन, नमाज, रोजा, के जरीअ़े ईसाले सवाब तो इस में

उलमाए अहले सुन्नत में इख़्तिलाफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अह्मद और सलफ़े स्वालिहीन के नज़दीक बदनी इबादत के ज़रीअे भी ईसाले सवाब दुरुस्त है इमाम मालिक से भी यही मन्क़ूल है। (तफ़सीर मज़हरी मुतरजम) वाक़िआ (वास्तविकता) यह है कि तिलावते क़ुर्आन के ज़रीअे ईसाले सवाब के दुरुस्त होने के सिलसिले में इतनी रिवायतें मौजूद हैं कि उन का इन्कार मुशकिल है मौलाना क़ाज़ी सनाउल्लाहथानी पती ने ऐसी कई हदीसें अपनी तफ़सीर में जमा कर दी है।

हज़रत अली (रजि0) से रिवायत है कि आप (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स (मुसलमानों के) क़बरिस्तान से गुज़रे और 11 बार सूर–ए–इख़्लास पढ़े और मुर्दो को उस का सवाब बख़्शदे तो कबरिस्तान के तमाम मुर्दो के बराबर उस को भी सवाब मिले गा।

हज़रत अबू हुरैरा से नक़्ल किया गया है कि आप (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जो कबरिस्तान में दाख़िल हो और सूर–ए–फातिहा व इख़्लास और तकासुर पढ़ कर कबरिस्तान वालों को बख़्श दे तो वह उस के लिये अल्लाह तआला से शफ़ाअत करेंगे।

हज़रत अनस (रज़ि0) ने आप (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) से रिवायत किया है कि जो शख़्स (मुसलमानो के) क़बरिस्तान में जा कर सूर–ए–यासीन पढ़े तो अल्लाह तआला मुर्दो से अज़ाब को हलका कर देंगे। (तफ़सीरे मज़हरी से संक्षेप)

रही बात कुर्आन की आयत "अल्लैस लिल इन्सानि इल्ला मा सआ" (अन्नज्म : 39) ज़ाहिर में यह हदीसें इससे टकराती हैं, लेकिन यह एक हक़ीक़त है कि यह आयत अपने ज़ाहिरी मफ़हूम में नहीं है। शैख़जादा ने इस पर बड़ी तफ़सील (विस्तार) से गुफ़्तुगू की है और इस पर कसरत से हदीसें और नज़ीरें पेश की हैं, इसी लिये आयाते क़ुर्आनी और हदीसों के बीच मुताबक़त (अनकूलता) पैदा करने के लिये मुफ़स्सिरान ने मुख़्तलिफ़ तौजीहात (विभिन्न स्पष्टीकरण) पेश की हैं, अबू दाऊद, इब्नि जरीर, इब्नि मुंज़िर और इब्नि मरदूदीया ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से नक़्ल किया है कि इस आयत का हुक्म मन्सूख़ है इस लिये कि इस के बअ्द "वल्लज़ीन आमनू वत्तबअतहुम ज़ुर्रिय्यतुहुम बि ईमानिन् अलहक़्ना बिहिम ज़ुर्रिय्यतहुम" (अत्तर : 21) (और वह लोग जो ईमान लाए और उन की औलाद ने भी ईमान लाने में उन की पैरवी की हम उन की औलाद को उन से मिला देंगे) नाज़िल हुई। जिस से मअलूम होता है कि स्वालेह बाप के अमले स्वालेह की वजह से अल्लाह तआला उन के ना बालिग मुतवफ़्फ़ा बच्चों को जन्नत में दाख़िल करेंगे। हज़रत अकरमा से मन्क़ूल है कि आयत में हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम की कौमों का ज़िक्र है उम्मते मुहम्मदीया (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये यह हुक्म नहीं।

(शैख जादा 4:416)

शैख़ ज़ादा का कहना है कि ईसाले सवाब इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं है। इस लिये कि ईसाले सवाब करने वाला जिस शख़्स की तरफ़ से अमले ख़ैर करता है गोया वह उस की तरफ़ से वकील व नुमाइन्दा होता है, और वकील का और उस की सई खुद मुअक्किल का अमल तसव्वुर किया जाता है, इस तरह. यह दूसरे का अमल भी खुद उस के अमल के हुक्म में है। (शैख़ ज़ादा)

कुरतुबी ने यह ख़याल भी ज़ाहिर किया है कि शायद आयत का तअल्लुक़ बुराइयों से हो कि एक की बुराई की ज़िम्मेदारी दूसरे पर न होगी। (शैख़ ज़ादा) चुनाँचि इस बात पर उम्मत का इजमाअ है कि ईसाले सवाब तो किया जा सकता है मगर ईसाल अज़ाब नहीं किया जा सकता। बअ्ज़ उलमा ने इस तरह मतलब लिया है कि मोमिन का दूसरे की सई से फाइदा उठाना उस के ईमान पर मबनी (आधारित) है और ईमान उस का अपना काम है, लिहाजा उस के लिये किसी और का अच्छा अमल करना ख़ुद उस की सई. (कोशिश) के ताबिअ हुआ। (तफ़सीरे मज़हरी) रबीअ बिन अनस से मन्क़ूल है कि यह हुक्म सिर्फ़ काफ़िरों के हक़ में है मुसलमानों के हक़ में नहीं है। (शैख़ ज़ादा)

शेष पृष्ठ 10

मुसलमानों पर एक नज़र

'यह रोने की जा है तमाशा नहीं हैं'

समाज सुधार

एम0 हसन अंसारी

(मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0 की ईद के मौके पर की गई एक तकरीर का हिस्सा

"अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि तुम पर कौमें इस तरह इक्ट्ठा हो जायें गी जिस तरह खाने वाले लगन पर। लोगों ने पूछा या रसुलुल्लाह! हमारी तादाद की कमी की वजह से? फरमाया, नहीं तुम बहुत होगे लेकिन तुम्हारा रोब उनके दिलों से उठ जायेगा। तुम बाढ़ के कूड़े करकट की तरह हो जाओगे।' यह तो अल्लाह देखता है लेकिन हम जो कुछ देखते हैं वह यह है कि :–

(1) इन में से बीसियों वह लोग है जो कलमः का अर्थ नहीं जानते और शिर्क व तौहीद और रिसालत के बारे में सिरे से उनका कोई अकीदः ही नहीं। ऐसे भी हैं जिन को कलमः याद भी नहीं। ऐसे कसरत से हैं जिन के दिल में तौहीद पूरी तरह से नहीं उतरी, न शिर्क से उन को कोई नफरत है। ऐसे भी कुछ कम नहीं कि कुर्आन मजीद के मुताबिक खुले शिर्क व बुतपरस्ती में मुब्तला हैं।

(2) सैकड़ों है जो इस्लाम को बिल्कुल नहीं समझते, न कभी समझने की कोशिश करते हैं। उन को इस्लाम या इस्लामी नाम घर के सामान और परंपराओं के साथ बाप दादा के तर्कः में मिला है। इसके बारे में उन को और कोई ज्ञान नहीं। वह नहीं जानते कि अल्लाह उन से क्या चाहता है, इस्लाम के क्या हुकूक और शर्तें हैं, इस्लाम ने उन के जीवन में कोई फर्क किया या नहीं?

(3) ऐसे बहुत है जिन की जिन्दगी और मौत किसी तरह इस्लामी नहीं और उन के रीति–रिवाज, शादी–गमी, रहन–सहन, चाल–ढाल, उठना–बैठना, व्यवहार किसी से भी कोई उन को मुसलमान नहीं समझ सकता।

(4) ऐसे लअक्सर हैं जो किसी अर्थ में इस्लाम और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की उम्मत के लिये लाभदायक नहीं और उन का होना न होना बराबर है।

(5) ऐसे बहुत है कि उन से इस्लाम के नाम और उस की ख्याति व इज्जत व कामयाबी को नुकसान पहुँच रहा है, उन को देखकर और उनके साथ रहकर लोग इस्लाम से बदअकीदा और कभी विमुख हो जाते हैं।

(6) बहुत से ऐसे हैं जिन को इस्लाम के खिलाफ और मुसलमान को नुकसान पहुँचाने के लिये इस्लामी पहचान और पवित्र स्थलों की बेहुर्मती के लिये मुफ्त और बहुत थेड़ी कीमत पर हर समय इसतेमाल किया जा सकता है।

(7) ऐसे बहुत ज्यादा हैं जिन को इस्लाम के साथ कोई दिलचस्पी और मुसलमानों के साथ कोई मुहब्बत व हमदर्दी नहीं, उनको इन की कठिनाइयों और जरूरतों की कोई जानकारी नहीं, वह यह भी नहीं जानते कि मुसलमान कहाँ–कहाँ बस्ते हैं और वह उनके लिये क्या कर सकते हैं।

(8) ऐसे भी हैं जो मुसलमानों को हकीर (तुच्छ) समझते हैं, मुसलमान कहलाने से शरमाते हैं और मजहब पर हंसते हैं।

(9) ऐसे भी हैं जो अपनी और मुसलमानों की हालत पर सन्तुष्ट हैं। इन में इस्लाम और मुसलमानों की इज्जत, गल्बः (बर्चस्व) और तरक्की के देखने का कहीं कोई शौक और अरमान नहीं होता है न मौजूदा जिल्लत से कोई तकलीफ होती है, इन को यह चीज कोई गैरमामूली नहीं मालूम होती।

(10) बहुत ऐसे है कि खुद अपनी नजर में उन की कोई इज्जत नहीं, वह अपनी कीमत नहीं जातने, अपने इतिहास अपने भूतकाल, अपने पूर्वजों और बुजुर्गों से बिल्कुल नावाकिफ हैं। वह किसी वक्त उन पर गर्व और अपने इस्लाम पर शुक्र नहीं करते और न इन को उनक की पैरवी का शौक है, और न खोई

हुई चीजों का अफसोस। उनके सामने इस्लाम का कोई असली नमूना और इस की कोई उच्च परिकल्पना नहीं, इस लिये वह सुस्त, निढाल और निराश हैं।

(11) अक्सर ऐसे हैं जो महज़ देखा देखी और रस्मी मुसलमान हैं, इस लिये न उन को इस्लाम का इल्म है न उस पर गर्व और शुक्र है न इस में उन को कोई चाव है। और न उन के आचरण व व्यवहार में इस्लाम के नूर व बरकत व असर है। बताइये कि ऐसे मजमा को देख कर क्या खुशी हो?

हक़ीक़त में आज–कल जहाँ मुसलमान जमा हो जायें वहाँ अकाइद व मज़हब का अजाइब खाना, दीनी व ईमानी बीमारियों का बीमारखाना, अवगुणों का बाजार लग जाता है। मगर

'यह रोने की जा है तमाशा नहीं है'

आइये हम अपना मुकाबला इस्लाम के पहले नमूनों से करें :–
1. सहाबः गिनती के थे और तमाम दुनिया पर भारी थे। 2. हम असंख्य (लातादाद) हैं और जमीन पर भारी हो रहे हैं। 3. सहाबः बादशाहों पर सल्तनत करते थे। 4. हमें गुलामों और गुलामों की गुलामी भी हजार दिक्कत से नसीब होती है। 5. सहाबः कुछ न थे और सब कुछ हो गये। 6. हम सब कुछ थे और कुछ न रहे। 7. सहाबः की दुनिया इज्जत व इतमीनान से बसर होती थी और आखिरत इस से कहीं बेहतर। 8. हमारी जिन्दगी जिल्लत फिक्र व परेशानी से गुज़रती है और आखिरत की भी देखने में उम्मीद अच्छी नहीं।

नअ़ते नबी
(सल्लाहु अलैहि व सल्लम)

नअ़ते नबी से पहले मैं, रब की सना करूँ
रहमत की बस बरसात हो, इस की दुआ करूँ

क़ुर्आन जो है मुअ़जिज़ा, सारा नबी पे है
इस का सबब तो साफ़ मैं, हुस्ने ख़ुदा कहूँ

देखा हुदैबिया में पानी का मुअ़जिज़ा,
दिल ने कहा मैं रोज़ व शब सल्लि अ़ला पढ़ूँ

जाबिर के घर में देख कर बरकत तआ़म में,
इस को तसर्रुफ़ ना कहूँ, वह मुअ़जिज़ा कहूँ

वह नूर हैं, हां नूर हैं, वह रब के नूर हैं,
क़ल्बी यक़ूल नूरुन, नूरुन अ़ला कहूँ

अब्रे करम का साया जब, होता नहीं जुदा,
साया नहीं था आप का, कैसे भला कहूँ

मक़्सद है उन की पैरवी, मक़्सद को छोड़ कर,
क्यों भाइयों से अपने मैं, झगड़ा किया करूँ

हुब्बे नबी तो शर्त है, ईमान की सुनो,
और पैरवी पहचान है, इस को बयाँ करूँ

आसी हूँ पर है नाज़ कि उन का गुलाम हूँ,
है हुक्म उन का याद मैं, रब की किया करूँ

सल्लि अ़लन्नबिय्ये रब, सल्लि अ़लर्रसूल
या रब मुझे तौफ़िक़ दे हरदम पढ़ा करूँ

❑❑

रसूल सल्ल0 का अखलाक व आचरण सहाबः को उठाता था बिठाता था, चलाता था, फिराता था, जुदा करता था, मिलाता था।

भड़कती न थी खुद–बखुद आग उनकी
शरीअ़त के क़ब्ज़े में थी बाग उनकी

जहाँ कर दिया नर्म नर्मा गये वह
जहाँ कर दिया गर्म गर्मा गये वह।

रहे हक़ में थी दौड और भाग उन की
फ़क़त हक़ पे थी जिस से थी लाग उन की

❑❑

एक ऐतिहासिक सभा

दिनाँक 2 अगस्त 2009 दिन शनिवार

स्थान : रवीन्द्रालय चार बाग़ लखनऊ

सैय्यद मुहम्मद जुबैर अहमद नदवी

किसी देश या राष्ट्र के वजूद व रक्षा के लिये तथा लोगों को स्वार्थ, अत्याचार, बेइमानी व चोरी से बचाने के लिये वास्तविक शक्ति अल्लाह (ईश्वर) में विश्वास और उसका भय है जब यह विश्वास इंसान के मन–मास्तिष्क में मजबूत हो जाए कि एक सवोपरी शक्ति है जो अन्धरे–उजाले में हम पर नजर रखती है और मुझे उसके सामने जवाब देना है तो वह कोई गलत काम नहीं कर सकता, सुधार के लिये इस से बढ़िया कोई उपाय नहीं हो सकता, यही असली शक्ति है जो चोरो को रक्षक बनाती है, इसके बाद यदि किसी हद तक कोई ताकत उसको विनाश से बचा सकती है तो वह है सच्चा देश प्रेम यह एहसास कि यह हमारा देश है हमारा शहर है अल्लाह न करे यदि किसी में दोनों भावनाएं समाप्त हो जाएं तो दुनिया की कोई शक्ति उस को विनाश से नहीं बचा सकती, कोई दर्शन, उच्च से उच्च शिक्षा तथा लाखों विश्वविद्यालय भी काम नहीं आ सकते। यह बिल्कुल स्वाभाविक व प्राकृति है कि इंसान उस घर की बर्बादी नहीं देख सकता जिसमें उसे रहना है और जहाँ उसका प्रिय सामान और जीवन की पूंजी है तथा जिसको बनाने व संवारने में उसकी और उसके पूर्वजों की उत्तम योग्यताए लगी हैं, यह प्रत्येक शुद्ध–प्रकृति वाले मनुष्य की विशेषता है कि वह जिस नाव पर सवार है वह किसी को उसमें छेद करने की इजाजत नहीं दे सकता, दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जिस डाली पर उसका घोंसला है उस पर यदि वह होश–हवास में है तो न स्वयं कुल्हाड़ी चला सकता है और न दूसरों को इसकी इजाजत दे सकता है।

उपरोक्त दोनो वकतव्य तहरीक–ए–पयाम–ए–इंसानियत (मानवता का संदेश आंदोलन) के संस्थापक मान्नीय श्री मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली नदवी (अ़ली मियाँ) की पुस्तक "कारवाने ज़िन्दगी भाग–2 से लिये गए हैं, मौलाना ने इस आँदोलन की स्थापना के कारणों व कारकों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि स्वतंत्रता कि लड़ाई और विदेशी जूए को उतार फेंकने की व्यस्तता ने देशवासियों को राष्ट्रीय निर्माण व चरित्र सुधार का समय नहीं दिया, देश तो स्वतंत्र हो गया परन्तु अ़तरात्मा गुलाम रही, यह देश किसी विदेशी शक्ति का नहीं बल्कि अकांक्षा, लालच, धन, शक्ति सम्मन सता संकुचित माँसिकता का गुलाम है, इतने बड़े देश की व्यवस्था तथा राज़नीतिक दलों की आपसी खींच तान व कुर्सी व सत्ता की रक्षा ने लोगों को समय नहीं दिया कि इस की ओर ध्यान दिया जाए .... हमने जब देखा कि इस देश के राज नेता जनसंपर्क करके उनके दिल व अंतरकण को जगाने का प्रयास नहीं कर रही हैं और न ही संवेदन शीलता को तेज व गति शील करने के लिए कुछ कर रहे हैं तो लंबी प्रतीक्षा के बाद अपनी कमजोरी तन्हाई और निशप्रभाव का पूरा ज्ञान व एहसास होने के बावजूद मैदान में आने व धर्म व समप्रदाय से ऊपर उठकर देश वासियों के दरवाजे खट खटाने का निर्णय किया।

मौलाना आजादी के बाद ही पयाम–ए–इन्सानियत के नाम से लखनऊ, वाराणसी, जौनपूर, गाजीपूर, सीवान और इलाहाबाद में मुसलमानों और गैर मुस्लिमों दोनों के संयुक्त सभा को संबोधिति करने तथा इस मुल्क के इंसानों के भीतर नैतिक एहसास को जागृत करने के मिशन पर लग गए। इस विषय पर उनके भाषणों के दो

संग्रह पयाम–ए–इंसानियत और मक़ाम–ए–इंसानियत के नाम से उर्दू व हिन्दी में बड़े स्तर पर प्रकाशित हुए, मौलाना का सदभावक संघर्ष किसी न किसी रूप से जारी रहा, बड़ी सादगी व निर्धनता के साथ, मगर अल्लाह के इस बन्दे की जुबान पर कभी अपनी निधनता व अकेलेपन की शिकायत नहीं आई और न ही संसाधन की कमी का बहाना किया और न ही संगठन व पार्टी बन्दी तथा आर्थिक फंड एकत्र होने की प्रतीक्षा की इस लिये कि आग अपने घर में लगी थी और असल समस्या इस घर को बचाने की थी स्वास्थ्य की खराबी, लेखन व संकलन के प्रिय तथा वास्ताविक लगन व रुची के बावजूद दो विषय उनके लिये असाधरण बल्कि जीवन–मृत्यु के समान थे, एक दीनी (धार्मिक) शिक्षा की समस्या दूसरे पयाम–ए–इंसानियत, उनको जब इन दोनों विषयों के संबंध में आमंत्रित किया जाता तो वे सारी व्यस्तताए छोड़कर उनके लिये तय्यार हो जाते, जब मौलाना ने जवानी में हजरत सय्यद अहमद शहीद की जीवनी लिखी तो उनकी दावत व अजीमत के पक्षों को सर्वाधिक उजागर किया उसका उनके दिल–दिमाग पर प्रभाव पड़ना व समाहित होना स्वभाविक था। इससे मौलाना के दिल पर प्रभाव पड़ा कि तंहाई में निर्धनता के साथ बैठ कर दुआ व तसबीह (प्रथर्ना व जाप) पर सारे संसार में निकल कर सच की आवाज बुलन्द करने को सदा वरियता दी जाती है फिर दावत व अज़ीमत के इतिहास के चौदह सौ साल का दौर उनके सामने था जिस में विभिन्न चरणों में इस्लाम के पुर्नजागरण तथा धर्म (दीन) के विकास के लिये जीवन के रणभूमि में निकलने वाले दाइयों और मुजाहिदों ने अनमिट चिन्ह छोड़े और समय की माँग पर अपने घर के सुख तथा प्रिय व्यस्तताओं की जिस प्रकार उन सज्जनों ने त्याग दिया, मौलाना ने भी स्वभाविक रूप से उन्हीं की पद्चिन्हों पर अग्रसर होना पसन्द किया ....मौलाना अ़ली मियाँ की इसी विशेषता के उत्तराधिकारी मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी साहब हैं जिन्हों ने अ़ली मियाँ के देहाँत के पश्चात अपने स्वास्थ्य की ख़राबी व पाठन तथा प्रशिक्षण की व्यस्तता के बावजूद इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार किया और एक बुद्धिमान दाई की तरह परिस्थतियों की माँग को सामने रखते हुए नई रणनीति, नई कवायद तथा नए संसाधन के साथ कार्यरत हैं लेकिन अति शांतिपूर्ण अंदाज़ से वह मानवता के खोजी और अमन शान्ति और सत्य की तलाश में परेशान लोगों से भेंट करते हैं, और इस्लाम के मूल–भूत अकाएद (विश्वासों) पर आधारित आकर्षक व प्रभाव शाली साहित्य उनको देते हैं फिर उनसे निरंतर संपर्क बनाए रहते हैं उनके मन–मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों का संतोष जनक उत्तर देते हैं।

हज़रत मौलाना अबुल हसन अ़ली नदवी (अ़ली मियाँ) ने शुभ चिन्तक व अशुभचिन्तक के मध्य अंतर को बताते हुए कहा था कि अशुभचिन्तक की नाव साहिल (तट) पर रहते हुए भी डूब जाती है जब कि शुभचिन्तक की नाव भंवर में रहते हुए भी मंजिल तक पहुंच जाती है, यही बात उनके आंदोलन पयाम–ए–इन्सानियत पर सिध होती है कि उनके स्वर्ग वास के बाद भी न केवल नए एरादे व संकल्प के साथ अपनी यात्रा का आरम्भ किया है बल्कि नए संसाधन, रणनीति व कवायद भी अपनाए हैं, कारण स्वरूप काम तेजी से फैल रहा है और दावत के नए नए क्षेत्रों की खोज हो रही है और इसके गहरे व दूरगामी प्रभाव पड़ रहे हैं, इस प्रभाव का प्रदर्शन तो वैसे बहुत से अवसरों पर देखा गया है, परन्तु 2 अगस्त को रवींद्रालय में ''हम और हमारा समाज'' विषयक जो सभा आयोजित हुई वह तमाम सभाओं में अलग पहचान रखती है जो ऐतिहासिक और दूरगामी प्रभाव वाली थी।

इस सभा से लगभग एक वर्ष पहले समाचार पत्रों में केवल उत्तर प्रदेश में गैर–मुस्लिमों के लिए ''इस्लाम अमन व शान्ति का संदेश'' के विषय पर निबंध प्रतियोगता की घोषणा की गई अनापेक्षित रूप से लग–भग चार हज़ार लोगों ने पंजीकरण के लिये पत्र लिखा इस चरण के बाद उन्हें हिन्दी व अंग्रेज़ी में पुस्तकें भी उपलध कराई गई जब

निर्धारित विषय पर निबंध आए तो यह देखकर हर्ष के साथ अचंभा भी हुआ कि अधिकतर लोगों ने इस्लाम से हार्दिक संबंध का उल्लेख किया।

प्रथम पुरस्कार से गाजियाबाद की पूजा आहूजा को सम्मानित किया गया जब की द्वितीय पुरस्कार के अमित खन्ना (लखनऊ) अधिकारी बने तथा तृत्तीय पुरस्कार अभिजीत खरे (लखनऊ) को दिया गया, इसके अतिरिक्त 23 पुरस्कार प्रोतसाहन व संतावना के रुप में दिये गये और बुजुर्गों को शाल प्रदान की गई तथा सभी पुरस्कृत गणों को स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र भी दिया गया। इन सभी पुरस्कारों में विशेष रुप से श्री अनवर जी (मुरादा बाद) को आर्थिक योगदान रहा।

इसी संबंध में प्रतियोगियों की इस्लाम शिक्षा और उसके नैतिक मुल्यों को देखते हुए पयाम–ए–इन्सानियत फोरम के तत्वधान में "हम और हमारा समाज" शीर्षक एक सभा के आयोजन की तैयारी 6 महीने पूर्व ही आरम्भ कर दी गई थी, उ0प्र0 पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों, सी0बी0आई0 अधिकारियों, शिक्षण सस्थानों से संबंधित लोगों के अतिरिक्त हरिद्वार के दो उच्च कोटि के मुख्य पदाधिकारियों से भी व्यक्तिगत भेंट कर निमंत्रण दिया गया, विभिन्न पत्रकारों तथा धार्मिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं से संपर्क कर उन्हें पयाम–ए–इन्सानियत से संबंधित साहित्य भेंट किया गया, जब सकारात्मक संकेत मिले तो उक्त लोगों से दो तीन बार भेंट की गई, ऐसे लोगों की संख्या 4000 थी और यह सब गैर मुस्लिम थे और अपने कार्य क्षेत्र में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे, मंच के मुख्य वक्ताओं के चुनाव में भी असाधारण सावधानी बरती गई गैरमुस्लिम महिलाओं को भी आमंत्रित किया गया।

समारोह में सम्मीलित समस्त लोग विधिवत रुप से आमत्रित थे, जिन की संख्या 5000 थी, पूरा हाल भरा हुआ था बड़ी संख्या में लोग हाल के बाहर थे निमंत्रण प्रत्र हिन्दी में था तथा कई भेंट मुलाकात के पश्चात उन्हें समारोह में सम्मीलित होने का निमंत्रण दिया गया था इसलिए अगन्तुओं में नव्वे प्रतिशत गैर–मुस्लिम थे, उद्देश्य यही था कि हिन्दु समाज तक यह दावत पहुंच जाए सभा का प्रभाव बहुत पड़ा जिसक अनुमान श्रोता गणों की बातों से लगाया जा सकता है। समारोह के कंविनर मौलाना अब्दुल्लाह हसनी साहब ने जो मुख्य व मार्ग–दर्शक भाषण दिया समस्त वक्ताओं ने उसी गाइड लाइन को सामने रखकर अपने विचार व्यक्त किए सभा के अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी साहब ने जो भाषण दिया वही मानो अमुल्य उपहार तथा जीवन का दिशा निर्देश था।

मौलाना ने विज्ञान टेकनालोजी के विकसित युग में मनुष्यों की हीनता और बड़े पैमाने पर गिरावट का उल्लेख करते हुए कहा कि हम सर्वोत्तम सृष्टि इस लिए हैं कि दूसरों के लिए हमारे दिल में संवेदना व सहानुभूति की भावनाएं है यदि हमारे भीतर मानवता नहीं है तो हम में और दूसरी सृष्टि में कोई अन्तर नहीं, मौलाना ने कहा कि साइंस और टेकनालोजी ने असाधारण रूप में विकास किया है परन्तु इसके बावजूद इंसान स्वार्थ के कारण जानवर बन चुका है।

आज की शिक्षा भी कुछ ऐसी ही हो चुकी है कि इन्सान को स्वार्थी बनाती है, मौलाना ने जातिवाद और देश–धर्म से उपर उठ कर पूरे मानव समाज के लिए सोचने तथा सर्वसमाज से सहानुभूति व संवेदना व मानवीय भाई चारा के प्रसार पर बल दिया मौलाना ने बुद्धीजीवियों व शासकों दोनों पर बल दिया कि वे परिस्थितियों को बदलने की निःस्वार्थ प्रयास करें, मानवीय भाई चारा व सहानुभूति के प्रसार के तरीके भिन्न हो सकते हैं, पयाम–ए–इन्सानियत का प्लेट फार्म भी इस क्रम की एक मुख्य कड़ी है, आवश्यकता है कि पार्टी हित से ऊपर उठकर सारे मानव समाज की सेवा के लिए अपने को लगा दें, हम जब तक निःस्वार्थ भाव से दूसरे की सेवा नहीं करेंगे उन में प्रेम उत्पन्न होना असम्भव है, सारे धर्मों का यही संदेश है।

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी जी ने आरम्भ में इस सभा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्यों को मनुष्यता का संदेश देना आशचर्य जनक बात

है, परन्तु यह जीवन की भी पहचान है, यदि रोगी को अपने रोग का एहसास हो तथा उपचार की भी चिंता तो उस से कुछ आशा की जा सकती है, परन्तु यदि रोगी अपने रोग व उपचार से बेफिक्र है तो उसका अल्लाह ही रक्षक है, मौलाना ने काह कि इतनी बड़ी संख्या में विशिष्ट–चुनिन्दा बुद्धी जीवियों की उपस्थिति इस बात की पहचान है कि हम सब को खतरों का एहसास है तथा हम चाहते हैं कि एक दूसरे को उन खतरों से अवगत कराएं जिन से हमारा समाज घिरा हुआ है, मौलाना ने पूरे मानव समाज को लगे हुए संगीन खतरों को बताते हुए गिनतीयों में अपनी बात को तार्किक रूप से प्रस्तुत किया और कहा कि इस समय हमारे समाज ने नई करवट ली है अब वे बातें सामने आने लगी हैं जिनकी कलपना भी निकट गत वर्षों में देश वासी नहीं कर पा रहे थे, जो हमारे पूरे देश के लिऐ खतरे की घण्टी है इस से भी आगे बढ़ कर यह हुआ कि अब नैति अपराधों को वैधानिक रूप से वैध ठहराने की कोशिश हो रही है, यह सब से बड़ी त्रासदी है। जिस का इस समय हमारा सामना है, मौलाना ने कहा कि भौतिकवादी मानिसकता, स्वार्थ, अहंवाद, सस्ती प्रसिद्धि की चाह तथा आनन्द की इच्छा ने पूरे मानव समाज को छिन्न–भिन्न कर दिया है प्रत्येक व्यक्ति इसी दौड़ में लगा हुआ है और एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहता है,..... मौलाना ने कहा कि ऐसा नहीं कि हमारे राज नेताओं व बुद्धि जीवियों को इसका एहसास नहीं, उन्हों ने चिंता की, कानून बनाए, कमेटीयाँ संगठित की, आयोग बैठाएं लेकिन न योरोप व अमेरिका इसमें सफल हुए और न ही हमारे देश में यह काम आए।

मर्ज़ बढ़ता गया जूँ–जूँ दवा की

मौलाना ने यूरोप व अमेरिका के अतिरिक्त भारत में नैतिक अपराध का उल्लेख संख्या व गिनती के रुप में करने के पश्चात कहा कि पश्चिम की नकल से इस समस्या का समाधान नहीं निकल सकता इसके लिए तो पैग़म्बरों के दिए हुए संसकारों और नियमों को अपनाना होगा, क्यों कि वे दिल को सम्बोधिति करते हैं तथा दिल के बदलते और सोच को ठीक करते हैं, इस लिए कि यदि दिल में बुराई है तो कानून उसको रोक नहीं सकता, उसके लिये अतंराकण को बदलने की आवश्यकता है और आंतरिक परिवर्तन के लिये "ईमान" से बढ़कर किसी और शाक्ति व प्रशिक्षण का अनुभव न हो सका, जब तक जनता में अल्लाह का विश्वास उसका भय और अल्लाह के सामने पूछ–गछ का खटका पैदा न होगा नैतिकता व प्रशिक्षण का सिरा हाथ नहीं आएगा।

प्रोफेसर कमल काँत बुधकर (अध्यक्ष पत्रकारिता ब्रिभाग गुरुकुल कान्गड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) ने बड़े सुलझे हुए भाव में भाषण दिया और एक पारभौ के समान परिस्थतियों का निरीक्षण करते हुए वास्तविक रोग कि और इशार करते हुए कहा कि आज यह बात लगभग सभी संगोष्ठियों में तथा समाचार पत्र–पत्रिकाओं में पढ़ने और सुन ने को मिलती है कि देश के हालात अच्छे नहीं है परन्तु सोचने की बात यह है कि किस मायने में अच्छे नहीं हैं, हमारे देश ने विज्ञान व प्राद्योगिकी के क्षेत्र में बड़ा विकास किया है लेकिन चिन्ता व खेद की बात यह है कि सारी तरक्की व विकास के बावजूद मानव जाति जिस उद्देश्य के अन्तर गत रची गई उससे हम दूर ही होते जा रहे हैं, हम ने मंजिल की बजाए रास्ते को ही अस्ल समझ लिया, दूसरे शब्दों में आज के मनुष्य ने अपने वस्तविक मालिक को भुला दिया और अपने ज्ञान–विज्ञान तथा अविष्कार व विकास पर ही गौरखवान हो गया, प्रोफेसर कलम काँत ने कहा कि दुनिया दो हैं, एक अल्लाह की बनाई हुई, एक इंसान की बनाई हुई अपनी दुनिया, जब इंसान अपनी बनाई हुई दुनिया को ही वास्तविक दुनिया समझने लगा और प्रकृति में हस्तक्षेप करने लगा तो लड़ाइयों व विरोधों का बाज़ार गरम हुआ, यदि धर्म लड़ाई और झगड़े को हवा दे तो वह मजहब नहीं, धर्म तो अल्लाह (ईश्वर) तक पहुँचने का रास्ता दिखाता है प्रोफेसर जी ने भौतिक मानसिकता का उल्लेख करते हुए कहा कि

इसी सोच ने स्वार्थ व निजी लाभ प्राप्ती की प्रकृति बनाई है जो इस देश की सुरक्षा व शान्ति–समृद्धि के लिये खतरनाक है, हमारे देश के पूर्वजों ने इस देश की आज़ादी का सपना इस लिए देखा था कि हम अपनी संस्कृति भाई चारा व सहानुभूति को जो इस देश का सवभाव रहा है, बाकी रखें न कि हम इतने आज़ाद हो जाएं कि अपनी चिन्ता के अलावा दूसरों के लिये हमारे हृदय में कोई स्थान न हो, अतः इंसान का पहला धर्म मानवता है और इसका वास्तविक गुण भाई चारा व संवेदना और पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव है।

पयाम–ए–इन्सानियत के इस समारोह में गायत्री परिवार के विशेष प्रतिनिधि पंडित वीरेश्वर उपाध्याय मंच पर अपने विशेष वेशभूश में उपस्थित थे केन्द्रीय हाल में उनके अनुयायी व शिष्य भी उपस्थित थे, उपाध्याय जी ने न केवल अपनी वेश–भूशा बल्कि अपने भाषण से भी श्रोताओं कणों का ध्यान आकर्षित किया, उन्हों ने अपने भाषण के आरम्भ में कहा कि मनुष्य समस्त सृष्टि में महान है परन्तु उस से महान उसका सृजनाकर्ता है, बंदों की और से अल्लाह (ईश्वर) के लिये प्रशंसा व आभार यह है कि हम इन्सान उसी की उपासना व बन्दगी करें इस लिये कि इसी में मानव समाज की सफलता व कल्याण निहित है हमको चाहिए कि अल्लाह (ईश्वर) के बनाए हुए नियमों व कानूनों का पालन करें तथा उसी के विधान को इस संसार में लागू करने का प्रयास करें, पंडित जी ने आगे कहा कि इंसान आत्मा व शरीर का संग्रह है शरीर समाप्त हो सकता है मगर आत्मा अमर है लेकिन अफसोस व दुःख की बात यह है कि हम आत्म की जगह पर शरीर की अधिक चिंता कर रहे हैं इस लिए मानवता संमाप्त होती जा रही है, उन्हों ने और कहा कि जिसने हमको बनाया उसको हम भूल गए हमारे भीतर जो भी कमजोरियाँ व खराबियाँ हैं उसकी जड़ अल्लाह (ईश्वर) को याद न करना है, अल्लाह (ईश्वर) ने तो हमको अपनी प्रतिष्ठा व महानता के अनुसार महान बनाया और अपने गुणों के अनुकूल हम में भाँति–भाँति के गुण रखे परन्तु हमने अपनी छोटी बुद्धि से छोटी चीजें बनाई और उन्हीं को सब कुछ समझ कर उनके सामने माथा टेकने लगे हम अपने पापों पर क्षमा याचना ईश्वर (अल्लाह) के सामने चढावा चढ़ा कर करना चाहते हैं जब कि क्षमादान केवल उपासना व कर्म से प्राप्त होता है, पंडित जी ने नैतिक कार्यों पर बल देते हुए कहा कि इस पर सारे धर्मों ने बल दिया है, सत्य, न्याय व अमन–शान्ति को समस्त मज़हबों में सराहा गया है, इन्सानों के बीच विरोध के बीज राज नेताओं ने बोए हैं, न्याय प्रिय लोग हर युग में थोड़े रहे हैं, इस का रोना हम को नहीं रोना चाहिए सत्य प्रकाश ऐसे ही लोगों के पास होता है, मुसलमानों से हमारी अपील है कि वे महम्मद साहब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में घटित हिलफुजूल की घटना से प्रेणा लें तथा उसी तड़प को अपनाएं जो उनके दिल में थी।

इस सभा के मुख्य अतिथी : वरिष्ट पत्रकार डा0 वेद प्रताप वैदिक थे जिन के भाषण के लिए सब लोग व्याकूलता पूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे, वह समारोह में जाने से पहले दारूल उलूम नदवतुल उलमा (नदवा कालेज) गए जहाँ के वातावरण व परिवेश ने उनके मन मास्तिष्क को विशेष रुप से प्रभावित किया उनके भाषण पर भी इस का प्रभाव आरम्भ में ही देखने को मिला तथा पयाम–ए–इन्सानियतके प्लेट फार्म से अपने भाषण को अपने लिये गर्व व सम्मान की बात करार दिया, उन्होंने कहा कि जो लोग इस इंसानियत की बस्ती में कुर्आन को सीख रहे हैं वास्तव में यही लोग मानवता की सत्ता के लिये तय्यार हो रहे हैं आज दुनिया वालों को इसी की चिंता नहीं है, यह बच्चे डाक्टर व इंजीनियर तो नहीं बन रहे हैं मगर यही लोग बड़े इंसान बनेंगे, इस लिये कि आसमानी ग्रंथों में जो संदेश है, वह संदेश दुनिया वालों को देना सबसे महान कार्य है। डा0 वेद प्रताप वैदिक ने तहरीक पयाम–ए–इंसानियत के

संस्थापक मौलाना अली मियाँ की प्रशंसा की उनसे भेंट न हो सकने को अपने लिये दुर्भाग्य पूर्ण घोषित किया, उन्होंने मौलाना के उत्तराधिकारी मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी साहब से भेंट को फखर की बात करार दिया।

डा0 वेद प्रताप वैदिक के भाषण से उस समय खल बली मची जब उन्होंने ईसाई व यहूदी धर्म में परिवर्तन का उल्लेख करते हुए इस्लाम में भी परिवर्तन की बात कह डाली, मौलाना ख़ालिद साहब नदवी ने बड़े अच्छे अंदाज़ से वैदिक जी की बातों का खण्डन किया, तथा आशा व्यक्त की कि मीडिया ने जिस विशेष धर्म के विरूद्ध जो तुफान खड़ा कर रखा है डा0 वैदिक जैसे वरिष्ट पत्रकार के द्वारा इस धर्म के चेहरे पर पड़े हुए उस गर्द व गुबार को साफ करने में सहायता प्राप्त होगी।

कानपूर के प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ डा0 जमील जी ने कहा कि इन्सान आत्मा व शरीर से मिलकर बना है आत्मा का संबंध ब्रह्माण्ड के सृजन कर्ता से है, अल्लाह की याद में जितनी बढ़ोत्तरी होगी उसी के समान आत्मा को बुलंदी प्राप्त होगी, दिल में जितना खुदा का डर होगा मानवता का उतना ही विकास होगा। डा0 साहब ने कहा कि आज की शिक्षा प्रणाली से मानव शरीर तो आकर्षिक हो गया है परन्तु उसका दिल राक्षस समान बन गया है, आज के युग में शरीर की चिंता अधिक तथा आत्मा की फिक्र कम हो गई है यही इस समय की सबसे बड़ी त्रासदी है।

सभा में सर्वाधिक (जिसमें गैरमुस्लिमों की बड़ी संख्या उपस्थित थी) विस्तार पुर्वक बात कनपूर के स्वामी लक्ष्मी शँकर आचार्या ने की स्वामी जी ने कुर्आन व हदीस की रोशनी में इस्लामी शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर वार्ता करते हुए कहा कि मानवता की सेवा विशुद्ध मन से करना ही अल्लाह (ईश्वर) की वास्तविक उपासना है, उन्हों ने कहा कि समाज सुधार का दायित्व उच्च शिक्षा प्राप्त बुद्धि जीवियों पर है स्वामी जी ने समाजी बुराईयों का निरिक्षण करते हुए कहा कि इसका वास्तविक उपचार कुर्आन व हदीस में हैं, उन्होंने बताया कि अन्य संप्रदायों की तुलना मुसलमान अपने त्योहारों तथा रमज़ान के महीने में दीन दुःखियों की सहायता करते हैं और जकात व सदक़े से बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता का प्रबंध करते, मुसलमानों में आज के इस भौतिक परिवेश में भी भाई चारा प्रेम अधिक दिखाई देता है, आगे कहा कि कन्या हत्या तथा जितने भी गलत काम हैं इन सब को रोकने की शक्ति इस्लाम में ही है इस लिए कि वह अपने अनुयायियों में ईश्वर (अल्लाह) का भय उत्पन्न करता है, उन्होंने कहा कि आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ना उचित नहीं है न ही देश हित में है और न ही समाज हित में, सूद की बुराई व समलैंगिगता की मनाही जितनी कठोरता के साथ कुर्आन में है कहीं और नहीं।

संगोष्ठी का केंन्द्रीय बिंदू "हम और हमारा समाज" था सारे वक्ताओं ने इसी विषय पर आधारित अपनी बात रखी और बताया कि आज के युग में विज्ञान व प्रोद्यिकी ने असाधारण विकास किया है इस विकास ने हमारे बाह्य को जितना चमकाया है उतना ही हमारी आंतरिक दुनिया वीरान हो गई है गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर के कुलपति प्रोफेसर अजाएब सिंह बरार ने जो शिक्षा–विद भी हैं... ... इस विषय पर बात की, उन्हों ने कहा की आज की त्रासदी यह है कि हमारे प्रतिभाशाली बच्चे अधिकत्तर प्रोफेशनल शिक्षा की और जा रहे हैं इसके कारण अच्छे डा0 इनजीनियर तो बन रहे हैं परन्तु अच्छे इंसान नहीं बन रहे हैं, इस लिये कि चरित्र निर्माण से इन संस्थानों का कोई सरोकार नहीं इस लिये कि चरित्र का निर्माण तो घर और समाज तथा भाषा व मानवता (Humanities and Haguages)के संस्थानों में होता है और इस में सब से बढ़कर उसके अभिभावक का येगदान होता है अतः यदि उसके माता–पिता अच्छी मान्सिकता बनाने का प्रयास करें तो बच्चा स्कूल में कोई भी शिक्षा ग्रहण करे एक अच्छा इंसान बनेगा इस लिये अभिभावको का कर्तब्य है कि वे अपने बच्चों की नैतिकता व चरित्र निर्माण की चिंता करें।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

पिछले अंक से आगे.....

— इदारा

हुमायूँ का प्रवास — लाहौर से प्रस्थान कर हुमायूँ ने हिन्दाल के साथ सिन्ध में प्रवेश किया; परन्तु दोनों भाई अधिक दिनों तक एक राय न रह सके। हुमायूँ को हिन्दाल के धर्म–गुरु की कन्या हमीदा बानो के साथ प्रेम हो गया जिसके साथ उसने 31 अगस्त 1541 ई0 को अपना विवाह कर लिया। इससे हिन्दाल हुमायूँ से अप्रसन्न हो गया और उसका साथ छोड़कर कन्दहार चला गया। हुमायूँ के साथियों की संख्या धीरे–धीरे घटने लगी। अतएव सिन्ध में उसका रहना खतरे से खाली न था। फलतः उसने मारवाड़ के शासक राजा मालदेव के यहाँ जाने का निश्चय किया परन्तु जब वह जोधपुर के निकट पहुंचा तब उसे यह ज्ञात हुआ कि मालदेव शेरशाह से मिल गया है और हुमायूं को कैद कर लेने का उसे वचन दे चुका है। इस सूचना से हुमायूँ आतंकित हो उठा और वहाँ से तुरन्त भाग खड़ा हुआ। जयसलमेर होता हुआ 22 अगस्त, 1542 ई0 को हुमायूँ बड़ी ही दयनीय दशा में अमरकोट पहुंचा। वहाँ के राजा ने उसका स्वागत किया और उसको हर प्रकार से सहायता करने का वचन दिया। वहाँ पर हुमायूँ लगभग डेढ़ महीने तक रहा। यहीं पर 15 अक्तूबर 1542 ई0 को हमीदा बानू बैगम से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम अकबर रखा गया। कई महीनेतक हुमायूँ सिन्ध में भटकता रहा। अन्त में 11 जुलाई 1543 ई0 को उसने कन्दहार के लिये प्रस्थान कर दिया। वह मार्ग ही में था कि उसे यह सूचना मिली कि मिर्जा अस्करी कामरान की आज्ञा से उसे कैद करने आ रहा है। अतएवं उसने अपने नवजात शिशु को अपने विश्वसनीय आदमियों के सरंक्षण में छोड़कर अपनी पत्नी तथा अपने बाईस स्वामिभक्त सेवकों के साथ दिसम्बर 1543 ई0 को गज़नी के मार्ग से फारस के लिये प्रस्थान कर दिया। इन स्वामि भक्त सेवकों में बैरम खाँ भी था। अस्करी ने हुमायूँ को चुपचाप चले जाने दिया क्योंकि उसने उसका पीछा नहीं किया। इस प्रकार हुमायूँ न केवल साम्राज्य की वरन् भारत की सीमाओं के बाहर चला गया।

जब हुमायूँ भारत से फारस की ओर जा रहा था तब सर्वत्र उसका स्वागत हुआ। जब फारस के शाह को हुमायूँ का एक पत्र मिला तब उसने अफसरों तथा गवर्नरों के पास यह आदेश भेज दिया कि हुमायूँ उसके राज्य में जहाँ कहीं भी जाय वहाँ उसका राजसी स्वागत किया जाय। फलतः जब हुमायूँ सीस्तान पहुंचा तब वहाँ के गवर्नर ने हुमायूँ का बड़ा स्वागत किया। सीस्तान से हुमायूँ हिरात तथा मशहद होता हुआ काजिबेक पहुंचा जो उन दिनों फारस की राजधानी थी। परन्तु उन दिनों शाह सुर्लिक में था जो उसकी गर्मियों की राजधानी थी। अतएवं हुमायूँ सुर्लिक चला गया, जहाँ जुलाई 1544 ई0 में वह शाह तहमास्प से मिला। फारस में हुमायूं अधिक प्रसन्न न रहता था। हुमायूं एक सुन्नी मुसलमान था परन्तु फारस का शाह शिया था। अतएवं एक शिया शाह की शरण में रहना हुमायूँ के लिये पीडाजनक था। विवश होकर हुमायूँ को एक पारसीक की भांति वस्त्र पहनना तथा आचार–व्यावहार करना पड़ता था। शाह का भाई भी हुमायूँ से वैमनस्य रखने लगा और शाह के कान लोगों ने इतने भरे कि वह भी हुमायूँ से अप्रसन्न हो गया। यहाँ तक कि हुमायूँ की जान खतरे में पड़ गई। इस संकटापन्न स्थिति में शाह की बहिन ने हुमायूँ की बड़ी सहायता की। उसने अपने भाई को हुमायूँ की सहायता करने के लिये तैयार कर लिया। शाह ने यह निश्चय किया कि वह लगभग 13 हजार अश्वारोहियों को शाहजादा

मुराद की अध्यक्षता में भेजेगा जो कन्दहार को हुमायूँ के लिये जीतेगा। इस सहायता के बदले में हुमायूँ से यह वादा कराया गया कि वह शाह की बहिन की लड़की के साथ अपना विवाह कर लेगा और जब फारस की सेना कन्दहार, गजनी तथा काबुल को जीत कर हुमायूँ को सौंप देगी, तब हुमायूँ कन्दहार फारस के शाह को लौटा देगा। इसके अतिरिक्त अन्य कोई धार्मिक, सम्प्रदायिक अथवा राजनीतिक शर्त नहीं रखी गई थी।

हुमायूँ की वापसी – फारस के शाह द्वारा दी हुई सेना के साथ हुमायूँ ने भारत के लिये प्रस्थान कर दिया। उसने कन्दहार पर आक्रमण कर दिया जिसकी सुरक्षा का भार कामरान ने मिर्जा अस्करी को सौंप रखा था। कन्दहार का घेरा लगभग पाँच महीने तक चलता रहा। अन्त में 3 सितम्बर 1545 ई0 को अस्करी ने दुर्ग को समर्पण कर दिया। अब फारस वालों ने, हुमायूँ से यह माँग की कि वह कन्दहार को, उनमें प्राप्त कोष को तथा अपने भाई अस्करी को उनको समर्पित कर दे। वे लोग मिर्जा अस्करी को कैद कर शाह के पास भेजना चाहते थे। हुमायूँ ने फारस वालों को प्रथम दो माँगें तो स्वीकार कर लीं परन्तु तीसरी माँग उसने अस्वीकार कर दी क्योंकि इससे बाबर के परिवार की प्रतिष्ठा पर बहुत बड़ा धक्का लगता था। इसका परिणाम यह हुआ कि हुमायूँ का फारस वालों के साथ झगड़ा हो गया। हुमायूँ ने फारस वालों को वहाँ से मार भगाया और कन्दहार पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। पर शाह को प्रसन्न करने के लिये बैरम खाँ को, जो शिया था, कन्दहार का गवर्नर बना दिया।

कन्दहार के सम्बन्ध में कुछ इतिहासकारों ने हुमायूँ पर विश्वासघात का आरोप लगाया है, परन्तु यह आरोप उचित नहीं है। हुमायूँ ने शाह को इस शर्त पर कन्दहार देने का वचन दिया था कि वह काबुल, गजनी तथा बदख्शाँ के जीतने में उसकी सहायता करेगा। अतएवं जब तक इन तीनों स्थानों पर हुमायूँ का अधिकार स्थापित न हो जाता तब तक कन्दहार का म्रागना अचित न था और हुमायूँ अपने वादे को पूरा करने के लिये बाध्य न था। इसके अतिरिक्त फारस के लोग कन्दहार में बड़े लोकप्रिय बन गये थे। इस के अलावा कन्दहार की जनता सुन्नी थी, फारस के शिया मुसलमान इनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार तथा अत्याचार करते थे। फलतः कन्दहार की जनता उन्हें घोर घृणा की दृष्टि से देखती थीं ऐसी स्थिति में कन्दहार फारस वालों को सौंपना उचित न था। इतना ही नहीं, जब तक हुमायूँ अफगानिस्तान को विजय में संलग्न था तब तक के लिये भी हुमायूँ के परिवार को दुर्ग में रहने की आज्ञा न दी गई। इससे हुमायूँ को बड़ी पीड़ा हुई। इसके अतिरिक्त उस समय हुमायूँ को एक सुरक्षित आधार की आवश्यकता थी जहाँ से वह अपने युद्धों का संचालन कर सकता। उसकी इस आवश्यकता की पूर्ति कन्दहार ही कर सकता था। अतएवं हुमायूँ का कन्दहार को हस्तान्तरित न करना सर्वथा उचित था।

कन्दहार को आधार बना कर हुमायूँ ने काबुल की ओर ध्यान दिया। हिन्दाल, जो इन दिनों काबुल में था, हुमायूँ से आ मिला। कामरान के अन्य साथी भी उसका साथ छोड़कर हुमायूँ से मिलने लगे। इससे कामरान भयभीत हो गया और काबुल से सिन्ध भाग गया। नवम्बर 1545 ई0 में हुमायूँ ने काबुल में प्रवेश किया जहाँ वह अपने तीन–वर्षीय बालक अकबर से मिला। हुमायूँ ने बदख्शाँ को भी जीत लिया और उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। यहाँ पर हुमायूँ बीमार हो गया और यह अफवाह उड़ा दी गई कि वह मर गया है। जब कामरान को इसकी सूचना मिली तब वह सिन्ध से चला आया और उसने फिर काबुल पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। स्वस्थ हो जाने पर हुमायूँ ने बदख्शाँ छोड़ दिया और फिर काबुल की ओर चल पड़ा। उसने काबुल का घेरा डाल दिया और उस पर प्रहार करना आरम्भ कर दिया। कामरान निराश हो गया। उसने हुमायूँ तथा

उसके अनुयायियों के परिवार के लोगों के साथ घोर अत्याचार किया। उसने बच्चों को तोपखाने के सामने दीवारों से लटकवा दिया। इन्हीं में अकबर भी था परन्तु समय पर उसे पहचान लिया गया जिससे तोपखाने का निशाना बदल दिया गया और अकबर की जान बच गई। अप्रैल 1547 ई0 में हुमायूँ फिर काबुल का स्वामी बन गया। परन्तु हुमायूँ का काबुल के लिये कामरान के साथ निरन्तर संघर्ष चलता रहा। इन्हीं संघर्षों में एक रात को मिर्जा हिन्दाल मार डाला गया। अन्त में कामरान घक्कर प्रदेश को भाग गया। वहाँ के शासक ने कामरान को हुमायूँ को समर्पित कर दिया। सभी अमीरों की राय थी के कामरान की हत्याकरवा दी जाय परन्तु हुमायूँ इसके लिये तैयार न हुआ। अतएवं उसे अन्धा कर देने का निश्चय किया गया। फलतः दिसम्बर 1551 ई0 में वह अन्धा कर दिया गया। प्रार्थाना करने पर कामरान को अपनी पत्नी तथा अपने स्वामिभक्त नौकर के साथ मक्का जाने की आज्ञा दे दी गई 5 अक्टूबर 1557 ई0 को कामरान का परलोकवास हो गया।

भारत की पुनर्विजय – अब हुमायूँ को अपने भाइयों के विरोध से छुटकारा मिल गया। इस समय इसके पास एक सुसज्जित तथा सुदृढ़ सेना भी थी। उसके अमीर भी उसके आज्ञाकारी बन गये थे। अब उसके सामने सबसे बड़ा काम भारत को फिर से जीतना था और उसको प्राप्त करने के लिये वह प्रयत्नशील हो गया। परिस्थितियाँ हुमायूँ के अनुकूल थीं। क्योंकि अफगान–साम्राज्य अब पतनोन्मुख हो चला था और उसे उन्मूलित करना कठिन न था। हुमायूँ के लिये वह स्वर्ण अवसर था। उसने 12 नवम्बर 1554 ई0 को काबुल से प्रस्थान कर दिया और 31 दिसम्बर को सिन्धु नदी के तट पर आ पहुंचा जहाँ बैरम खाँ भी उससे आ मिला। हुमायूँ ने सिन्धु नदी को पार किया और बिना किसी कठिनाई के रोहतास के दुर्ग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया जिसका निर्माण शेरशाह ने करवाया था। 24 फरवरी 1555 ई0 को हुमायूँ लाहौर पहुंच गया और उस पर अपना अधिकर स्थापित कर लिया। लाहौर से हुमायूँ की सेनाएं आगे बढ़ीं और कई स्थानों पर अफगानों को परास्त किया। अन्त में 23 जून 1555 ई0 को सरहिन्द के मैदान में मुगल तथा अफगान सेनाओं में भीषण संग्राम हुआ। इस युद्ध में अफगान सेना परास्त हो गई और हुमायूँ को पूर्ण विजय प्राप्त हो गई। सरहिन्द की विजय ने दिल्ली का फाटक खोल दिया, समाना के मार्ग से हुमायूं दिल्ली की ओर बढ़ा 20 जुलाई 1555 ई0 को हुमायूँ ने सलीमगढ़ दुर्ग में प्रवेश यिका जो हुमायूँ के 'दीनपनाह' के चारों ओर बनाया गया था। इस प्रकार हुमायूँ ने अपने पूर्वजों के खोये हुए साम्राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया।

हुमायूँ के अन्तिम दिवस – यद्यपि हुमायूँ ने दिल्ली पर उसी सरलता से अपना प्रभुत्व स्थापित किया जिस प्रकार उसने अहमदाबाद तथा गौढ़ पर कर लिया था परन्तु उसका काय्र समाप्त नहीं हुआ था। पंजाब की जनता पूर्ण--रूप से सन्तुष्ट न थी। सिकन्दर सूर परास्त होकर शिवालिक की पहाड़ियों मे चला गया था और अपनी शक्ति को पुनः संगठित करने में सलंलग्न था। अन्य प्रान्तों में भी अफगान बड़े शक्तिशाली थे और बिना संघर्ष किये नत–मस्तक होने के लिये उद्यत न थे। अतएवं भारत की विजय का काय्र अभी अपूर्ण ही था और इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये परिस्थितियाँ हुमायूँ के अनुकूल थी। अब उसके सामने उस प्रकार की कठिनाइयाँ न थीं जिस प्रकार की उसके प्रारम्भिक जीवन में थीं। अब उसे बहादुरशाह अथवा शेरशाह जैसे प्रबल शत्रुओं अथवा अपने ईर्ष्यालु भाइयों का सामना नहीं करना था। उसके अमीर भी उसके प्रति स्वामिभक्त बन गये थे और विश्वासघात की अधिक सम्भावना न थी। भयंकर मुसीबतों का सामना करने के उपरान्त हुमायूँ में दृढ़ता आ गई थी।

❑❑

ख़लायी बस्तियाँ

अबू ओमामा

यह सच है कि जंग इन्सानों जानवरों यहां तक कि जमीन पर पाई जाने वाली दीगर जानदार और बेजान अशियाओं में से किसी के लिये भी मुफीद नहीं है मगर इन्सान फिर भी जंग लड़ने से बाज़ नहीं आता है। आख़िर इन्सान ऐसा क्यों करता है? दरअसल जमाने कदीम से जंग बहुत सारे मक़ासिद के हुसूल का एक जरिया बनी हुई है। सदियों से इलाक़ाई कब्जों के साथ वहां मौजूद कुदरती वसायल पर क़ाबिज होकर उससे फायदा उठाना जंगों के बहुत सारे मक़ासिद में से एक अहम मकसद रहा है। मिसाल के तौर पर 15वीं सदी से आज तक मग़रिब अपनी हुकूमत और इक़्तेदार को वुसअत देने की आरजू का तर्जुबा इसी जमीन पर करता रहा है और उसके नतीजे में अन्दरून और बेरूने मग़रिबी जंगों का एक तवील सिलसिला तारीख़ में हमें देखने और पढ़ने को मिलता है। इसकी इन्तेहाँ जंगे अज़ीम **(अव्वल / दोम)** में कत्लेआम की शक्ल में दुनिया को देखने को मिला। ईराक जंग भी उसी का नमूना हमारे सामने पेश करती है। क्या जंग और जंगों से होने वाली तबाही व बर्बादी से निजात पाने की कोई सूरत है? फिलहाल ऐसी कोई कारगर सूरत मौजूद नहीं है। लेकिन ख़लायी बस्तियां एक ऐसी फिक्र को अमली जामा पहनाकर मुस्तकबिल में शायद इन्सानों के लिये जंग और जंगों से होने वाली तबाही और बर्बादी को कम कर पाना या उससे निजात हासिल कर पाना मुमकिन हो सके।

ख़लायी बस्तियों से मुराद है **"ज़मीन से अलाहदा हो कर रहना और काम करना"** खला में यह रिहाइश सिर्फ चांद या मिर्रीख पर ही नहीं होगी बल्कि खला में घूमते और तेरते हुए बहुत सारे छोटे–बड़े सैय्यारचों पर ओर बहुत बड़े Space ship/ Spacecraft तैयार कर उन्हें ख़ला में तायनात कर उन पर भी ख़लायी बस्तियां आबाद की जा सकती है। साइंसदानों ने दुनिया के सामने यह नजरिया पेश किया है कि हम ख़ला में ख़लायी बस्तियां बना सकते हैं और उनमें रह भी सकते हैं। यह ख़लायी बिस्तयां ताज्जुब, हैरत और करामात से भरी होंगी। यहां वजन का कोई एहसास न होगा। शानदार और दिलफरेब मनाज़िर देखने को मिलेंगे। ज्यादा जगह मुहैय्या होगी और सबसे बढ़कर खूब सारी दौलत, सच्ची आज़ादी होगी और जग के ख़तरात से महफूज़ होंगे। ख़लायी बस्तियां इलाकाई और वसायल के लिये दुनिया में हो रही जंगों को माज़ी का अफसाना बना देंगी।

ज्यादातर वसायल जो कुदरत ने मुहैय्या कराया है वह जमीन पर मौजूद नहीं है। वह खला में है। खला में मौजूद इन वसायल को हासिल करने और इस्तेमाल करने के लिये इब्तेदा ने किए जाने वाले इखराजात जियादा महसूस हो सकते हैं लेकिन अगर हम इन इखराजात का मवाजना किसी भी जंग में किए जाने वाले खर्चों से करें तो मालूम होगा कि जंग पर किया जा रहा खर्चा कई गुना ज्यादा है। एक आला दर्जा खलायी बस्ती के तामीरी प्रोग्राम में एक अन्दाजे के मुताबिक एक सौ अरब डॉलर का खर्चा आएगा। जब कि सिर्फ अमरीका का दफायी सालाना बजट छः सो अरब डॉलर है। खलायी बस्तियों के जरिए हमें जो वसायल हासिल होंगे वह किसी भी आला सतह पर कामयाबी के साथ लड़ी गई जंग से कभी भी हासिल नहीं हो सकते है। जंग जीतने के नतीजे में जो वसायल हासिल होंगे भी वह खलायी बस्तियों में हासिल होने

वाले वसायल के मुकाबले में बहुत ही अदना होंगे।

हमारे निजाम शमशी के **Asteroid belt** मैं मौजूद हजारों/लाखों सैय्यारचों में से सिर्फ एक सैय्यारचा **(Ceres)** पर मौजूद अशिया को इस्तेमाल करते हुए खलायी बस्ती तामीर जाए तो हमको जमीन के कुछ सतही रकबे का दो सौ गुना बड़ा रकबा हासिल हो जाएगा। यह रकबा ज़मीन पर मौजूद हर एक मुल्क को इस कदर रकबा मुहैय्या करा सकता है, जैसे उस मुल्क ने सारी जमीन फतह कर ली हो। आज किसी मुल्क के लिये पूरी जमीन पर काबिज हो पाना तो शायद नामुमकिन है पर ख़लायी बस्ती का तामीर करना मुमकिन हो सकता है लेकिन अभी यह मूशिकल पेचीदा और खतरात से भरा काम है।

जमीन के आस–पास से हजारों सैय्यारचे होकर गुजरते है। उनमें से सिर्फ एक सैय्यारचा जिसका नाम 3554 अमुन है पर धात का बहुत बड़ा जखीरा मौजूद है। इस जखीरें की कीमत एक अन्दाजे के मुताबिक 20 खरब डॉलर है। ख़लायी बस्तियां हमें बेपनाह वसायल बहुत ही कम वक्त, कम लागत कम खर्चे, कम अम्वात, कम तबाही की कीमत पर मुहैय्या करा सकती हैं। शायद अब वक्त आ गया है कि लोग जंग की जगह जिन्दगी को तरजीह दें।

पिछले 50–60 सालों में अमरिका और रूस जैसे मुल्कों ने इस मैदान में नुमायॉ काम अंजाम दिया है उनके खलाबाज खला में वक्तन फवक्तन जाते रहे हैं और कई बार वहां महीनों ठहर कर तर्जुबात में गर्क रहे हैं। कई बार उनके खलायी जहाज और इसी तरह की कई खलाई मशीन खला में चक्कर लगाकर अहम मालूमात के साथ आते रहें हैं। यह सलिसिला बराबर जारी है। इस तरह की बाज मशीनें अब भी दीगर सैय्यारों परं उतर कर या उसके आस–पास चक्कर लगा कर अपना काम कर रही हैं और बराबर अहम मालूमात जमीन पर भेज रही हैं। यह तमाम मेहनत और कोशिश खलायी बस्ती कायम करने की राह में संगेमील और मशअले राह साबित होंगी। चीन और जापान और दीगर मुमालिक भी इस मैदान में तेजी के साथ काम कर रहे हैं। खलायी बस्ती कब वजूद में अयेगी इसके बारे में कुछ भी यकीन के साथ अभी नहीं कहा जा सकता है, लेकिन मेरी दुआ है कि यह खलायी बस्तियां जब कभी भी वजूद में आये तों, अम्न व सलामती और इन्सानियत की फलाहो बहबूद ही उसके वजूद में आने की बुनियाद हो।

(नेशनल स्पेस सोसाइटी की मैगजीन adAstra अगस्त, 2007 से इस्तफादा)

❑❑

हुब्बे हुसैन (रज़ि0)

डा0 हारून रशीद

हुब्बे हुसैन जिस में नहीं दिल वो नहीं है
हुब्बे हुसैन का मक़ाम अअ़ला व अरफअ़
है दिल से चाहता उन्हें अल्ला का नबी है
अल्लाह के महबूब हैं रसूल के महबूब
अब्बू का उन के नाम अअ़ला है अ़ली है
अल्लाह की जो लाडली यह उन का लाडला
देखो तो क्या मक़ाम हुसैन इब्नि अ़ली है
इब्नि ज़ियाद कैसा था हज़रत को न समझा
मंजिल तो ऐसे शख़्स की दोज़ख़ की गली है
ये हक़ न था यज़ीद को बैअ़त तलब करे
उस ज़ात से जो हिज्रे नुबुव्वत में पली है
ये तअ़ज़िया रखना नहीं है उन की महब्बत
यह बात सहीह दोस्तो उलमा ने कही है
हम तो हुसैन के हैं हुसैन हमारे
ये बात दिल से बन्दए आ़सी ने कही है
दोनों शहीद सुन लो कि जन्नत में हैं सरदार
रब से इशारा पाके ये नाना ने कही है

❑❑

जारी

स्वतंत्रा संग्राम में नदवतुलउलमा की भूमिका

अनुवाद - हबीबुल्लाह आज़मी

अब्दुल वकील नदवी

मौलाना सैयद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

स्वतंत्रा संग्राम में जहाँ हर बुजुर्गों और नवजवानों ने भाग लिया वहीं बच्चों ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और उनसे जो कुछ बन पड़ा वह अपनी क्षमता के अनुसार देश को आजाद करने के लिये कार्य करते। कुछ तो जुलसे, जलूसों में शामिल होकर झण्डे लगाते, नारेबाजी करते अपने नेता और पार्टी के लिये वालेन्टियर के रुप में कार्य करते।

उन्हीं में हमारे नदवा बिरादरी के होनहार, विद्वान लेखक, महान आलिमे दीन, पत्रकार मौलाना सैय्यद वाजेह रशीद नदवी हैं जिनकी उम्र आजादी के समय 13 या 14 साल की रही होगी और उस समय वह दारुल उलूम नदवा की छटी सातवीं कक्षा के विद्यार्थी थे उन्होंने विशेष अन्दाजे बयान के साथ आजादी के समय के वातवरण, परिस्थितियों, और हालात का वर्णन करते हुए लेखक के प्रश्नों का उत्तर देते हुए बताया :–

हम लोग जमीयतुल उलमा के बहुत बड़े समर्थक और वालेटियरों में थे क्यों कि मेरे खान्दान के शैखुल हिन्द मौलाना हुसैन अहमद मदनी से पुराने सम्बन्ध थे और फिर यह उलमा की जमात थी जो मुस्लिम लीग की घोर विरोधी थी।

मौलाना कहते हैं कि हम लोग राजनीतिक जलसों में शरीक होते इस कारण मुहल्ले में रहने वाले मुस्लिम लीगियों से तनाव रहता था और हमारे मामूं डा0 अब्दुल अली ही के घर पर मौलाना मदनी ठहरते थे। जमीयतुल उलमा में उलमा की बड़ी संख्या थी, इस लिये हम लोग भी जमीयतुल उलमा से जुड़े हुए थे और उस के हर जलसे जुलूस में भाग लेते। मेरा घर, फिरंगी महल, अमीनाबाद पार्क इन सब पर्टियों के कार्य स्थल थे। बड़ी घमा घमी रहती थी और बड़े–बड़े राजनीतिक आन्दोलनों के सिलसिले में इन सब लीडरों का आना जाना लगा रहता था। हम लोग उस समय बच्चे थे, इस लिये हमारे सम्बन्ध प्रत्यक्ष रुप में इन नेताओं से नहीं थे लेकिन एक बच्चे की हैसियत से इन लोगों को देखा और उनसे हाथ मिलाया। खास तौर से मौलाना अब्दुल माजिद दरया बादी, अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी, मौलाना मसऊद अली नदवी के अतिरिक्त मौलाना अबुल वफा शाहजहाँ पूरी, मौलाना अब्दुल हलीम सिद्दीकी आदि से बराबर मुलाकात रही। मौलाना हिफजुर्रहमान सेहारवी, मौलाना अहमद सईद मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी के भाषण सुन्ने का अवसर प्राप्त रहा।

लखनऊ से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में तनवीर, हक़ीकत और अन्त में कौमी आवाज थे। उस समय बच्चा मुस्लिम लीग के मुकाबले में स्वर्गीय मुहम्मद मियाँ और हम सब मित्रों ने "जमीयतुल अतफाल" की स्थापना की ओर उस की सभाएं नियमित रुप से होती रहतीं थीं मुस्लिम लीग वालों ने एक पंक्ति उलमा की हजो (बुराई) में कही थी। उसके जवाब में हम लोगों ने एक नज्म (कविता) मुस्लिम लीग के नेताओं के हजो में लिख कर दीवार पर चिपका दिया। उस को पढ़कर मुस्लिम लीग वालों ने काफी हंगामा किया। हम लोगों ने एक हस्त लिखित पत्रिका (कलमी पर्चा) भी निकाला। उस समय लाहोर से एक

दीनी पत्रिका निकलती थी उस में हमारी खाला अम्मतुल्लाह तसनीम के लेख प्रकाशित होते थे।

मौलाना सैयद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी की जन्म तिथि 1933 है लेकिन काग़जात में आप की तारीख 1935 मिलती है। मौलाना दारुल उलूम नदवा से पहले दिल्ली रेडियो स्टेशन में कार्यरत थे। आजादी के बाद रेडियो स्टेडियों में बहुत से राज नेता इन्टरव्यू देने आते रहते थे। उनमें से अधिकाँश नेताओं की मुल्लाकात मौलाना से होती और विचार विमर्श भी होता। मौलाना इस समय नदवतुल उलमा में मोअतमदे तालीम (शिक्षा सलाहकार) के उच्च पद पर कार्यरत हैं। मौलाना के विचार दूरदर्शिता बुद्धिमानी, राजनीतिक सोच व अनुभव से हर एक अवगत है जो किसी परिचय का मुहताज नहीं।

मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी का बचपन और स्वतंत्रा आन्दोलन

मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी एडीटर (सम्पादक) "अलबास इस्लामी" प्रिन्सिपल दारुलउलूम नदवतूल उलमा एक इन्टरव्यू के दौरान कहते हैं कि आजादी के जमाने में मेरी उम्र लगभग बारह तेरह साल रही होगी, इस लिये किसी आन्दोलन में शरीक होना सम्भव नहीं था लेकिन वालिदे मुहतरम (माननीय पिता) उस समय जमीयतुल उलमा के प्रशँसकों बल्कि सक्रीय सदस्यों में थे, इस लिये हम जमीयतुल उलमा से प्रभावित थे जब कि मुस्लिम लीग और खिलाफत आन्दोलन और काँग्रेस पार्टी के जलसों, जलूसों में और चुनाव के हंगामों में एक तमाशाई की हैसियत से शरीक हुआ करते थे और जब लोग आजादी के नारे लगाते या नेताओं के आने पर खुशी प्रकट करते तो मैं भी बच्चों की पंक्ति में शामिल होकर देश की आजादी में कदम से कदम मिला कर चलने की कोशिश करता। इस के अतिरिक्त मौलाना हिफजुर्रहमान सेवहारवी, मौलाना अब्दुल मजीद हरीरी, मौलाना अबुल वफा शाहजहाँ पूरी, मौलाना अब्दुल हलीम सिद्दीकी आदि जो आजादी की राह के मुसाफिर थे बच्चों के गिरोह के साथ उन से भेंट कर के सम्मान प्राप्त करता था। अलबत्ता आजमगढ़ का मशहूर कस्बा जो इस समय जिला मऊ के नाम से जाना जाता है वहाँ के एक काँग्रेसी नेता अलगू राय शास्त्री की अध्यक्षता में एक सम्मेलन जवाहर लाल नेहरु के स्वागत में हुआ तो वहाँ के उलमा के पीछे–पीछे अपने साथियों और पिता के साथ मैं भी शरीक हुआ और मऊ में जो भी दीनी और सीरत के जलसे होते तो मैं अपनी कम उम्री के बावजूद उसमें शामिल रहता। जमीयतुल उलमा का झण्डा लगा कर आजादी के बाद लखनऊ में आजाद काँसफ्रेंस में भाग लेने के लिये मौलाना कमाल अलियाबादी प्रिंसिपल मदरसा फैजुल उलूम रामनगर बाराबंकी के साथ लखनऊ आया और पहली बार मैं ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को अपनी आँखों से देखा और इस से पहले दारुल उलूम देवबन्द के चन्द दिनों के विद्यार्थी जीवन में शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी को करीब से देखने का मौका मिला। यही उन दिनों में भाग लेने का कार्य था। इस से बढ़कर एक बच्चे का स्वतंत्रा के तअल्लुक से क्या इच्छा हो सकती है। अलबत्ता मौलाना मुहतरम की शैक्षिक योग्यता बहुत उच्चकोटि की है। आपके बारे में विषय से हट कर केवल इतना कहना काफी है कि आप अर्बी भाषा और साहित्य के महान वक्ता पत्रकार, भारत के महान दारुल उलूम (महाविद्यालय) के प्रधानाचार्य और इमाम, प्रसिद्धि अर्बी पत्रिका "अलबअस" के सम्पादक, बहुत से स्कूलों व मदरसों के सरपरस्त (अभिभावक) इंटिग्रल यूनिवर्सिटी के चाँसलर व संस्थापक (बानी), कौमी और देश सेवा के तौर पर एक आलिमे दीन और मिल्ली सेवा को संयम (तकवा) के रुप में गिना जा सकता है। आप की जन्मतिथि रिकार्ड में 1936 दर्ज है। खुदा आप की उम्र में बरकत नसीब फरमाये।

❑❑

किस्त 18

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ह़कीमे मुतलक	सर्व ज्ञानी	ह़लीम	सहन शील	ह़ौसिला	उत्साह
ह़ल्ल	समाधान	ह़िल्या	रूप	ह़ौसिल अफ़्ज़ाई	प्रोतसाहन
ह़लाल	वैध	ह़िमाक़त	मूर्खता	ह़ौसिला शिकनी	उत्साह भंजन
ह़लावत	मिठास	ह़म्माम	स्नानागार	ह़ौसिला शिकन	उत्साह भंजक
ह़िल्लत	वेधता	ह़िमायत	सहायता	ह़ौसिला मन्द	साहसी
ह़लफ	शपथ	ह़िमायल	माला	ह़ौज़	जल कुन्ड
ह़लफ़ बरदारी	शपथ ग्रहण	ह़म्द	ईशवन्दना	ह़वेली	भवन
ह़लफ़नामा	शपथ पत्र	ह़म्ल	भार	ह़या	लज्जा
ह़लफीया बयान	शपथ कथन	ह़म्ल	गर्भ	ह़यादार	लज्जावान
ह़लक़	गला	ह़म्ला	आक्रमण	ह़यात	जीवन
ह़ुलक़ूम	गला	ह़म्लाआवर	आक्रमणकारी	ह़यातियात	जीवन विज्ञान
ह़लक़ा	क्षेत्र	ह़मीयत	स्वाभिमान	ह़यातीन	पोशक तत्व
ह़लक़–ए–असर	प्रभाव क्षेत्र	ह़लीफ़	एकाग्र	ह़ैसीयत	स्थिति
ह़लका बगोश	दास	ह़वास	इन्द्रिय	ह़ैसीयत उ़र्फ़ी	मर्यादा
ह़लक़ा बगोश	कान में किसी	ह़वासे खम्सा	पंच इन्द्रिय	ह़ैरान	व्याकुलत
की ग़ुलामी	छल्ला पहनना	ह़वालात	रोधागार	ह़ैरानी	व्याकुलता
ह़िल्म	सहन शीलता	ह़वाला	संदर्भ	ह़ैरत	आश्चर्य
ह़लवा	मिष्ठान	ह़वाला नवीस	संदर्भ लिपिक	ह़ैरत अंगेज़	अश्चर्यजनक
ह़ल्ल व उ़क्द	व्यवस्था	ह़ूत	मीन	ह़ैरत ज़दा	चकित
ह़ल्ल व उ़क्द	खोलना और बांधना	ह़ूर	जन्नत की लड़किया अफ्सरा	ह़ैज़	मासिक धर्म

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

पाक को हर साल 15 अरब देगा अमेरिका

न्यूयॉर्क! अमेरिकी सीनेट ने पाकिस्तान को दी जाने वाली असैन्य मदद की राशि तीन गुना बढ़ा दी है। सीनेट ने यह प्रस्ताव देने वाले केरी–लूगर बिल को एकमत से पारित कर दिया। अब अमेरिका पाकिस्तान को असैन्य कार्यों के लिये हर साल 15 अरब डॉलर देगा। 'आतंगवाद के खिलाफ जंग' में मुख्य भूमिका निभाने वाले अपने 'साथी पाकिस्तान को यह मदद वहां बदतर हो रहे हालात को सुधारने के लिये दी है। सीनेट के विदेश मामलों की समिति के प्रमुख सदस्य और यह बिल पेश करने वाले सीनेटर डिक लूगर के अनुसार 'हम पाकिस्तान की जनता को यह साफ तोर पर बता देना चाहते हैं कि हमारा मकसद वहां प्रजातंत्र स्थापित करना, स्थायित्व लाना और आतंक से लड़ना है।

मारा जा चुका है लादेन : जरदारी

इस्लामाबाद! पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी का कहना है कि अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन जीवित नहीं है। बतौर राष्ट्रपति एक वर्ष पूरा करने के अवसर पर 'बीबीसी' को दिए इंटरव्यू में जरदारी का पूरा जोर देश की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था और पश्चिम से ज्यादा से ज्यादा मदद हासिल करने पर रहा। जरदारी ने कहा, 'यदि दुनिया की सेनाएं अफगान सीमा की देखरेख नहीं कर सतीं तो मुझे ज्यादा समय और ज्यादा संसाधन दीजिए, जिसकी मुझे जरूरत है। हम कर दिखाएंगे।'

हमने पकड़े 'मेड इन इंडिया हथियार : जरदारी

इस्लामबाद! पाकिस्तान के राष्ट्रपति अली जरदारी ने कहा है कि उनके पास पक्के सुबूत हैं कि भारत पाकिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अशांति फैलाने की साजिश कर रहा है। जरदारी ने कहा कि अशांत जनजातीय क्षेत्र में मिले हथियारों पर भारत के निशान पाए गए हैं। साथ ही भारतीय रुपए भी बरामद हुए हैं। इससे उनका दावा सही साबित होता है कि भारत वहां अशांति फैला रहा है। जरदारी ने यह बात न्यूयॉर्क में अमेरिकी विदेश मंत्री हिलरी क्लिंटन से मुलाकात के दौरान कही।

पकिस्तान राष्ट्रपति ने कहा कि हमारा यह मानना ह कि बातचीत से ही दोनों देशों के बीच लंबे समय तक शांति बहाल रखी जा सकती है। उन्होंने कहा कि यह ध्यान रखना होगा कि जमीनी स्तर पर क्या हो रहा है। अगर आतंकवादियों को रुपए और हथियार दिए जाते रहेंगे तो शांति बहाल करना मुश्किल हो जाएगा। जरदारी ने कहा कि पाकिस्तान अपनी धरती का इस्तेमाल किसी भी आतंकवादी घटना के लिये नहीं होने देगा। चाहे इसके लिये कुछ भी करना पड़े।

हमला करने वालों का हाथ काट देंगे

तेहरान! ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने पश्चिमी देशों को चेतावनी दी है कि ईरान पर यदि किसी ने हमला किया तो उसका मुँह तोड़ जवाब दिया जाएगा। अहमदीनेजाद ने राजधानी तेहरान में वर्ष 1980 में शुरू हुए ईरान–इराक युद्ध की याद में आयोजित सैन्य परेड में यह चतावनी दी। उन्होंने कहा कि ईरानी सेनाएं हमला करने से पहले ही हमलावार के हाथ काट देंगी। विश्व के किसी भी देश में इतनी ताकत नहीं है की हम पर हमला करने का साहस कर सके।

रूस के शीर्ष सैन्य जनरल के खिलाफ जाँच

मास्को! चेचन्या में बर्बरता के कारण बदनाम हुए रूस के एक शीर्ष जनरल के खिलाफ जाँच की जा रही है। यह जाँच उस रिपोर्ट को लेकर की जा रही है सिमें कहा गया था कि उन्होंने आपराधिक जाँच में हस्तक्षेप के लिये सैनिकों का इस्तेमाल किया।

❑❑